CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवनी

तुंगातीर के तपस्वी

(श्री श्रीमदभिनवविद्यातीर्थ)

लेखक

पं. वेंकटाचल शर्मा
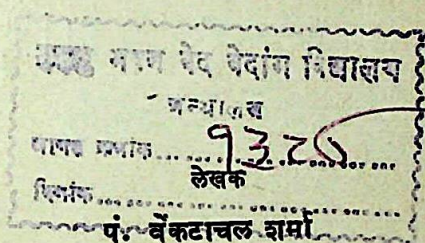
(विश्रांत-साहित्य मंत्री, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास)

प्रकाशक

तुंगा तरंग प्रकाशन

श्री शंकरमठ, शंकरपुरम्

बेंगलूर–560 004

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेखक का निवेदन

प्रिय पाठक,

प्रस्तुत जीवन चरित, वर्तमान जगदगुरु श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्त गुरुवर्य के जीवन का है। इसे लिखने की प्रेरणा कुछ विशिष्ट कारणों से हुई, ढाई-तीन वर्ष पूर्व। गुरुवर्य के चरण सान्निघ्य में रहकर श्रृंगगिरि के शांतवातावरण में वहाँ संपन्न होनेवाले विशेष अनुष्ठान तथा प्रमुख उत्सवों को देखने का सुअवसर मिला। इन अनुष्ठानों और उत्सवों ने जो प्रभाव मुझपर डाला वह कालक्रम में गहरा होता आया। इन समारंभों में केवल मानवता की नींव पर आर्षेय सत्य-धर्म पर अवलंबित सनातन भारतीय संस्कृति का नवोदय हो रहा प्रतीत हुआ।

इस तरह के अनुभव के बाद मैं चार-छः बार श्रृंगेरी गया। वहाँ समय समय पर होनेवाले समारंभ एवं व्रत अनुष्ठानों का मूक प्रेक्षक बन कर देखता रहा। प्रत्येक बार कुछ नवीन अनुभूतियाँ हुईं। इन अनुभूतियों को केवल मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने में ही अनुभव कर सकता हूँ। इन्हें अभिव्यक्त करने की वाणी मुझमें नहीं। यह गूंगे का गुड़ है। स्वाद का अनुभव होता है पर यह स्वाद कैसा है - सो बताया नहीं जा सकता।

कभी आचार्यपाद का दर्शन निराकार लिंग रूप में पाया तो कभी मानव रूप में। इस में कोई संदेह नहीं कि आचार्यपाद की आराधना से संतुष्ट हो कर आश्रित शरणागत को शरण देकर उसका उद्धर करने के लिए श्रीमाता शारदा अदृश्य रूप में वहाँ विचारण करती रहती है। कहाँ कौन कब क्या करता है - इसे वह स्वयं साक्षी हो कर देखती और योग्यता के अनुसार मार्गदर्शन किसी न किसी रूप में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से करती रहती है। यह उन तपस्वी आचार्यों की तपस्या का प्रभाव है।

तपस्या का प्रभाव कोई भौतिक वस्तु नहीं जिसे लेकर प्रयोगशाला में प्रयोगों द्वारा प्रत्यक्ष दिखा सके। यह अभौतिक अध्यात्म वस्तु है जिसे हम पकड़ कर इन प्रयोगशालाओं में प्रयोगाधीन नहीं बना सकते। इस के लिए अध्यात्म प्रयोगशाला ही उपयुक्त स्थान है। ऐसी प्रयोगशाला नरसिंहवन में एक है जिसे मैंने देखा। इसके प्रधान आचार्य हैं श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ-वर्य।

नरसिंहवन की इस अध्यात्म प्रयोगशाला में हो रहे प्रयोगों को मूक प्रेक्षक मात्र वन कर देखने का सौभाग्य मुझे समय समय पर प्राप्त हुआ। कई वार इन प्रयोगों से प्रभावित हो कर मैंने अपने इस आराध्य गुरू के सामने अपनी प्रतिक्रियाओं को लिपिबध्द कर प्रस्तुत्त भी किया। संभवत: मेरी प्रतिक्रियाओं को पढ़कर गुरुवर्य के मन में मेरे प्रति एक असंतोष की भावना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी उत्पन्न हुई होगी। परंतु एक जिद्दी शिष्य पर उस असंतोष को कैसे प्रकट कर सकते हैं? अनुग्रह कर उध्दार करनेवाले गुरु और अल्हड़ मनमाने सोचने विचार करनेवाले जिज्ञासु शिष्य। द्वैविध्य में पड़े संघर्षाधीन मन को लेकर आश्रय पाने के लिये वार वार निकट पहुंचनेवाले मुझ जैसे का निवारण भी कैसे करते? मैं जिद्दी था। मेरे मन में संघर्ष चल रहा था। संघर्ष के समय में एक वार नहीं अनेक वार मेरे चित्त-पटल पर प्रत्यक्ष विराजते और मुझे संभालते। इस तरह की अनेक स्वानुभूतियाँ ही इन पंक्तियों में व्यक्त हुई हैं।

मैं अपनी स्मरणशक्ति पर अधिक विश्वास नहीं कर सकता। अत: मैं जब जैसी अनुभूति हुई तब उसे अपने रोजनामचे (डाइरी) में लिख देता। तीन-चार वर्षों की मेरी डाइरियाँ (रोजनामचे) इस पुस्तक के लिए आधार बनी हैं। इस मुख्य आधार सामग्री के अलावा कुछ अन्य पूर्व प्रकाशित समग्री का उपयोग संदर्भानुसार किया है। परंतु प्रधान आधार मेरी डाइरी और स्वानुभूतियाँ हैं। जिन गुरुवर्य की कृपा से मैं ने इन अनुभूतियों को पाया, उन्हें उन्हीं गुरु चरणों में समर्पित कर रहा हूँ।

"त्वदीयं वस्तु गोविंद तुभ्यमेव समर्पितम्।"

गुरुचरणरज
पं. वेंकटाचल शर्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राक्कथन

॥ श्रीः ॥

इतो द्वादशशत वत्सरेभ्यः पूर्वं बौद्धानां इतरेषां च अवैदिकानां प्रावल्येन वैदिक मतं क्षीणं क्षीणं तत्र तत्र भारते कथंचित् प्राणान् धारयति स्म। तदा कुमारिल भट्टाः बौद्धान् वादे निर्जित्य निगूढतर युक्ति शतधारैः परेषां मतानि खण्डयित्वा प्रणीय वैदिक मत-स्थापन समर्थान् ग्रंथान् वहून्, वैदिक मतं उद्दध्रुः। तावतापि वेदान्तानां अर्थ-निर्णय आसीत् वैमत्यम्।

यद्यपि उपनिषदां, भगवद्गीतानां, ब्रह्म-सूत्राणां च विवरणानि भगवदुपवर्षादि कृतानि प्रचार आसन्, तथापि अर्थनिर्णये कुहचित्कुहचित् आसीत् न्यायमार्ग विदूरता। तां परिहृत्य सुगमीकर्तुं निश्रेयस मार्गं भगवत्पादैः श्री शंकराचार्यैः निरमीयन्तोपनिषदां, भगवद्गीतानां, ब्रह्म-सूत्राणां च भाष्याणि, सुवहूनि प्रकरणानि च। तमिमं अद्वैत संप्रदायं स्वयं निष्कंटकितं भविष्यतां मुमुक्षूणां हिताय परिरक्षवः श्री भगवत्पादाः शिष्य परंपरां भारतस्य चतुसृषु दिक्षु मठस्थापनेन स्थिरीकृतवंतः।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेषु, दक्षिणस्यां दिशि तुंगभद्रा तटे सुप्रसिद्धः श्रृंगगिरि मठः, यत्र सुरेश्वर विद्यारण्य प्रभृतयो विद्यातपो मूर्तयो बहु प्रौढ ग्रन्थ विरचनेन मुमुक्षुजनानन्वगृण्हन्। तस्यां परम्परायां श्री जगद्गुरु चंद्रशेखर भारती स्वामि गुरु करकमल संजाताः श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ स्वामिपादाः संप्रति विराजन्ते।

आद्वाविंशति वत्सरेभ्यः पीठाधिपत्यं अलंकुर्वाणाः वेदान्तादि शास्त्राणां मठस्य च सर्वपथीनां परिवृद्धि संपादयन्। संप्रत्यपि सर्वतो वृद्धिमेव संपादयंतः परिश्राम्यंतः शिष्य हितैकतत्पराः विलसति।

एतेषां महानुभावानां चरितं सुलभया राष्ट्र-भाषया श्री पं. वेंकटाचल शर्माणः जग्रन्थुः। प्रशंसनीया एषा प्रवृत्तिरेतेषां। इदं पठित्वा पुण्य संपादनद्वारा श्रेयः प्राप्नुवंतु श्रयः कांक्षिण इति अभिप्रैमि।

वे. सु. रामचन्द्र शास्त्री

नल संवत्सर
कार्तिक सुदी एकादशी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीः

प्रसन्नता की बात है कि मेरे पूज्य गुरुवर्य श्री पं वेंकटाचल शर्मा जी ने श्री श्री १०८ अभिनव विद्यातीर्थ जी (श्रृंगेरी के जगद्गुरु की गुरु-परंपरा में पैंतीसवें) का जीवन चरित प्रस्तुत किया है। श्री श्री १०८ जगद्गुरु जी के जीवन-चरित को लिखने के लिए पूज्य श्री शर्मा जी से बढ़कर योग्य हिन्दी विद्वान् का मिलना संभव नहीं था। वे शारदा-पीठ की जानकारी रखने के अतिरिक्त, श्री स्वामी जी के अत्यंत श्रध्दालु भक्त एवं संस्कृत तथा वेदान्त विद्या के अभिज्ञाता भी हैं।

भारत वर्ष में श्रृंगेरी-पीठ का महत्वपूर्ण स्थान है। आदि जगद्गुरु श्री शङ्कर भगवत्पादाचार्य जी ने अपनी बत्तीसवीं अवस्था में जो आध्यात्मिक विद्या का सम्पादन एवं अनुष्ठान किया वह सामान्य मनुष्य की कल्पना से भी परे है। उन्होंने दक्षिण में श्रृंगेरी, पश्शिम में द्वारिका, और उत्तर में बदरी, पूर्व में पुरी (जगन्नाथ) में चार आम्नाय पीठों की स्थापना की। इस गुरु-परंपरा और पीठ परंपरा में श्रृंगेरी के पीठस्थ स्वमीजी की प्रमुखता है। वही प्रधान पीठ है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्तमान स्वमी जी श्री श्री अभिनव विद्यातीर्थ जी वडे विद्वान् हैं, तपस्वी हैं और भारतीय आध्यात्म विद्या के आचार्य हैं। देश में कई विश्वविद्यालय हैं, पर आध्यत्म विद्या के लिए यह (शारदा विद्या पीठ) एक मात्र विश्वविद्यालय है। ऐसे विद्यापीठ के स्वामी जी की ख्याति सारे भारत में ही नहीं, अपितु समूचे विश्व में व्यापे हुए है।

पं. श्री वेंकटाचल शर्मा जी ने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के साहित्य मंत्री की हैसियत से ही नहीं, अन्य कई ओहदों पर आसीन हो कर दक्षिण के हिन्दी क्षेत्र में पचास वर्षों से अधिक की सेवा की है। अनुभवपूर्ण विद्वत्ता, सधी हुई कलम, गुरुभक्ति और व्यापक दृष्टि इस जीवन चरित के लेखन कार्य में लगी है। आशा है कि उनकी कलम से इस महान् गुरु-पीठं से संबद्ध और भी कई ग्रन्थ निकलेंगे और वे गुरुकृपा के अधिकाधिक पात्र होंगे।

गुरुचरणकमलाराधक,

ना. नागप्पा

विश्रांत हिन्दी प्रोफेसर तथा अध्यक्ष
स्नातकोत्तर हिन्दी अध्ययन एवं अनुसन्धान
विभाग मैसूर विश्वविद्यानिलय, मैसूर-6

मैसूर
6-11-1976

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो बातें

आचार्य शंकर को हम भगवान् शंकर का अवतार ही मानते हैं। आठवीं शताब्दी में उनका अवतार हुआ था और उन्होंने भारत के धार्मिक क्षेत्र में महान् जागृतिक क्रान्ति की और अद्वैतवाद के महत्व का स्थापन किया। आसेतु हिमाचल पर्यन्त विस्तृत पर्यटन कर दिग्विजय प्राप्त कर चुकने के उपरांत उन्होंने देश के चतुर्दिकों में चार मठ तथा आम्नाय पीठ स्थापित किये। उनमें दक्षिणाम्नाय पीठ पवित्र सलिला तुंगा तीर पर स्थित श्रृंगेरी की पावन भूमि पर स्थापित है। तब से कई तपस्वी तथा साधक आचार्यों ने उस पीठ को विभूषित कर श्रृंगेरी मठ तथा आम्नाय पीठ के माहात्म्य का वर्धन किया है। संप्रति श्री श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ महास्वामी जी ने उस पवित्र पीठ को अलंकृत किया है जो स्वयं महान् तपस्वी तथा साधक हैं। उनकी तपो-महिमा तथा अद्‌भुत साधना का ही नहीं, अपितु श्रृंगेरी मठ तथा पीठ के माहात्म्य का भी भारत के समस्त वैदिक धर्मावलंबी श्रद्धालु जनों को परिचय कराना प्रस्तुत ग्रन्थ के कर्तृ पंडित श्री वेंकटाचल शर्माजी का सदाशय है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्रंथकर्ता पंडित श्री वेंकटाचल शर्मांजी संस्कृत, हिन्दी तथा कन्नड, तेलुगु आदि कई भाषाओं तथा साहित्यों के प्रकांड पंडित हैं। लगभग पचास वर्ष तक आपने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास के विभिन्न ओहदों पर - क्या साहित्य मन्त्री, क्या परीक्षा मन्त्री, क्या प्रान्तीय मन्त्री और प्रेस का पर्यवेक्षक रहकर दक्षिण में हिन्दी प्रचार एवं प्रसार के कार्य में अद्वितीय योगदान दिया है। संप्रति आप मैसूर विश्वविद्यालय के द्वारा प्रकाशित होनेवाले हिन्दी, कन्नड, अंग्रेजी त्रिभाषा कोष के संपादन-कार्य में संलग्न हैं। जब आपने मुझे अपना यह ग्रन्थ पढ़कर सुनाया तो मैं भावाभिभूत हो गया। ग्रन्थ की भाषा, शैली व भाव, प्रभावपूर्ण एवं विचारवर्धक हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ में अपनी गुरु - भक्ति का निवेदन स्पष्ट है। आप जैसे समर्थ विद्वान् तथा निष्ठवान् पंडित ही तो हिन्दी-भाषी जनता के सम्मुख ऐसा ग्रन्थ प्रस्तुत कर सकते हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी - भाषी जनता इस ग्रन्थ का समादर करेगी। मैं अपने श्रद्धेय गुरु एवं मित्र के इस पवित्र कार्य के संबंध में हृदय की दो बातें लिखने तथा गुरुपीठ के प्रति अपने नमन अर्पण करने के सुअवसर प्राप्त कर अपने को कृतकृत्य समझता हूं।

गुरुचरणानुरागी,

प्रो. एम. के. राजगोपाल, एम. ए.
प्राध्यापक तथा अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
संत फिलोमिना कालेज, मैसूर - 1

मैसूर
6-11-1976

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे आदरणीय मित्र पं. वेंकटाचल शर्मा ने श्रृंगेरी के जगद्गुरु श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ गुरुवर्य की जीवनी व उपलब्धियों की झांकी इस पुस्तक में प्रस्तुत की है। वास्तव में यह केवल जीवनी न होकर श्री शर्माजी की स्वानुभूतियों की अभिव्यक्त है। गुरुवर्य के सत्संग में रहकर आध्यात्म तत्व-चिन्तन की प्रवृत्ति श्री शर्माजी में सक्रिय हो उठी है। अपनी स्वानुभूतियों को अभिव्यक्त करना क्लिष्ट कार्य होने पर भी लोगों के सामने यथाशक्ति स्पष्ट अभिव्यक्त करने का यह एक सफल प्रयास है।

श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ के दर्शन व समक्ष विचार विनिमय करने का सौभाग्य मुझे भी कई वार मिला था। जब जब मैं मिला तब तब मैंने कुछ विशिष्ट प्रकार के अनुभव पाये। सामाजिक, धार्मिक व तत्कालीन समस्याओं के सवंध में विचार विनिमय करने का भी मुझे सौभाग्य मिला था। गुरुवर्य के विचार बहुत ही प्रगतिशील हैं। गुरुवर्य के इन विचारों को सोचते समय ऐसा लगता है कि इन विचारों का अनुष्ठान, सक्रिय रूप से सार्वजनिक करेंगे, तो वर्तमान स्वतंत्र भारत के शरीर में आत्म विकास की प्रवृत्ति जगेगी और एक भावैक्य-पूर्ण सांस्कृतिक भारत का विकास होगा। यदि भौतिक दृष्टि से राजकीय क्षेत्र में राष्ट्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वतंत्र हुआ है तो उसमें प्राण प्रतिष्ठा आध्यात्मिक नींव पर करना इन्हीं गुरुवर्यों का कर्तव्य तो है ही। आदि शंकर ने यही काम किया था।

यों देखा जाय तो ये अध्यात्मपीठ भारत के अपने और राष्ट्रीय हैं। इनके पीठाधिप राष्ट्रीय सन्यासी हैं। धर्म समन्वित सत्ता-विधानों के अधिकारी मार्ग दर्शक हैं। इनका संपूर्ण जीवन राष्ट्र के लिए धरोहर है। श्री श्रीमदभिनव 'विद्यातीर्थ के समस्त अनुष्ठान इसी सांस्कृतिक भारत के निर्माण की ओर निश्चित कदम है। यत्र तत्र इस पुस्तक में लेखक ने इन बातों की ओर संकेत भी किया है।

इस पुस्तक के लेखक पं. वेंकटाचल शर्माजी ने अपने जीवन का अधिकांश काल हिन्दी प्रचार व प्रसार में व्यतीत किया है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा से उनका संबंध कुछ दशाब्दियों से रहा है। उस सभा के साहित्य विभाग के मंत्री की हैसियत से साहित्य सृजन का उन्होंने प्रशंसनीय कार्य किया है। पं. शर्मा जी ने कई हिन्दी के कार्यकर्ताओं को हिन्दी में लिखने की प्रेरणा व प्रोत्साहन दिया है। 'दक्षिण भारत' और 'हिन्दी प्रचार समाचार' के संपादक रह कर उन्होंने पत्र कारिता की अपनी सिद्धियों का भी परिचय दिया है। वे हिन्दी, संस्कृत और कन्नड के मूर्धन्य विद्वान हैं। कोश संपादन में उनकी विशेष लगन रही है। फिलहाल केन्द्र सरकार की तरफ से मैसूर विश्वविद्यानिलय द्वारा त्रिभाषा कोश का संपादन कार्य कर रहे हैं।

श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ की जीवनी की भाषा प्रांजल है, शैली रोचक और काव्यमय है। प्रतिपादन विषयानुकूल और स्पष्ट है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक लोकप्रिय बनेगी और लेखक का प्रयास सफल होगा। इन पङ्क्तियों द्वारा अपनी गुरु भक्ति गुरु चरणों में समर्पित कर रहा हूँ। यह सुअवसर श्री शर्मा जी ने जो मुझे दिया उसके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

गुरुचरण सेवक,

कटील गणपति शर्मा,

एम. ए., एल. बी.

संस्थापक निर्देशक : विश्वविद्या सदन

व्यवस्थापक निर्देशक : श्री प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

बेंगलूर

15-12-1976

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाठकों से

प्रिय पाठक,

इस पुस्तक को आप के सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष हो रहा है। यह एक महा तपस्वी के जीवन से तथा उनकी तपस्या से संबंधित जीवन-चित्र है।

श्रृंगगिरि के नाम से अपरिचित व्यक्ति भारत में विरले ही मिलेंगे। इस स्थान का संबंध बहुत प्राचीन काल से सिद्ध पुरुष तपस्वियों से हैं। यहाँ की प्राकृतिक-सुन्दरता और सात्विक वातावरण से अप्रभावित व्यक्ति देखने को न मिलेगा। देश-विदेश के व्यक्ति ज्ञान की खोज में यहाँ आकर आत्म-सन्तोष के साथ लौटे हैं।

अब वर्तमान पीठाधिपति गुरुवर्य श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ एक पहुँचे हुए सिद्ध-पुरुष हैं। वर्तमान वैज्ञानिक युग में प्राचीन वैदिक युगीन साधनोपलब्धियों के समन्वय द्वारा अध्यात्म भारत का निर्माण अपने अनुष्ठानों से कर रहे हैं। यह सामयिक आवश्यकता भी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वानुभूतियों को लिपिबद्ध कर इसके लेखक ने इन तपस्वी महापुरुष की महत्ता को इन पङ्क्तियों में व्यक्त किया है। आस्तिक श्रद्धालु इन पङ्क्तियों को पढ़कर आवश्यक जानकारी से लेखक को अभिज्ञ करें तो वह वहुत कृतज्ञ होंगे।

इस पुस्तक के आवरण पर उपयुक्त चित्र समय पर तैयार कर देनेवाले कलाकार श्री शंकररावजी को तथा इसे छाप कर देनेवाले श्री कृपानन्दजी को धन्यवाद किन शब्दों में दें। भाई शंकररावजी कलाकार होने के साथ-साथ दार्शनिक हैं। श्री कृपानन्दजी मुद्रक होने के साथ गुरुवर्य के श्रद्धालु भक्त हैं। इस कार्य में दर्शन और भक्ति दोनों का संगम हुआ है जिस में श्रद्धा का संयोग हुआ है। इस में यत्र तत्र कुछ असावधानी के कारण मुद्रण की तृटियाँ हो गयी हों तो सहृदय पाठक क्षमा करें और शुद्धि पत्रानुसार ठीक कर लें और पढ़ें।

पाठक गण इसे अपनाएंगे और गुरुकृपा भाजन होंगे— ऐसी आशा है। यह अभिलषित आशा पूर्ण हो जाय तो लेखक अपने को कृतार्थ मानेंगे।

—लेखक

बेंगलूर

16-11-1976

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगद्गुरु श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ

(वाल-संन्यासी)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगद्गुरु श्री श्री चन्द्रशेखर भारती गुरुवर्य का चरणानुगमन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुरुवर्य को पुष्पगुच्छ समर्पण
मैसूर के महाराज महामहिम श्री जयचामराज ओडेयर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
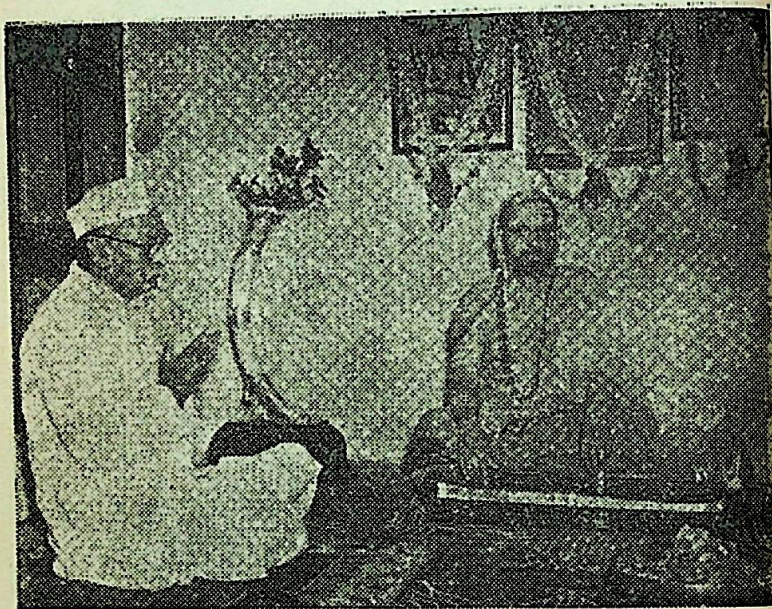
भारताध्यक्ष राचेंद्र बाबू के साथ - श्रृंगगिरि में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
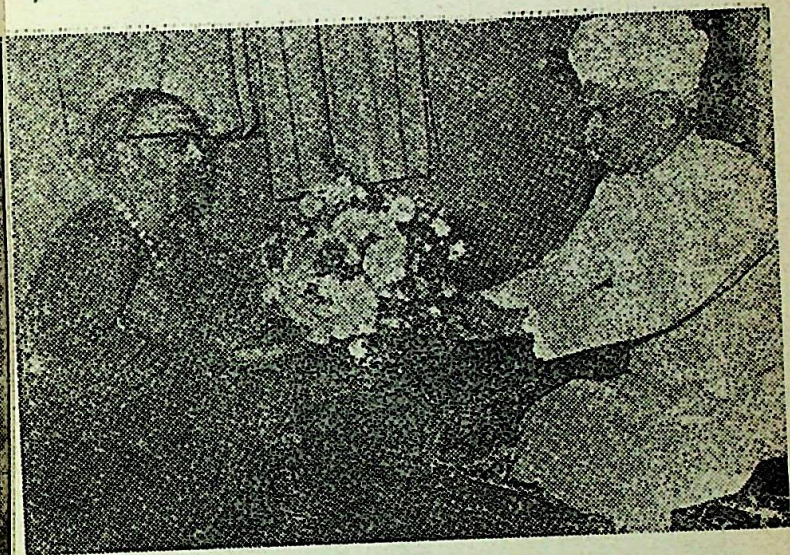
अंतर राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त दार्शनिक एवं भारताध्यक्ष
श्री राधाकृष्णन् से विचार-विनिमय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
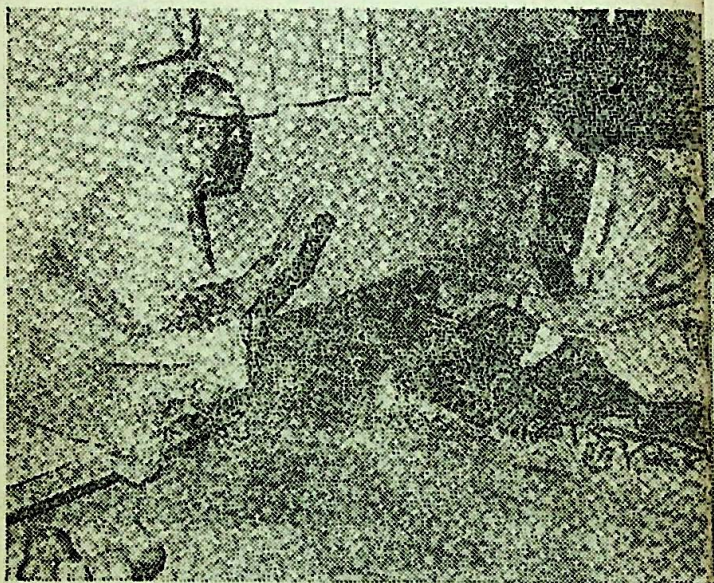
गुरुवर्य से प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरागांधी विचार-विनिमय करते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री एल्सवर्त बंकर और श्री साइमन्स– गुरुवर्य से
विचार-विनिमय करते हुए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
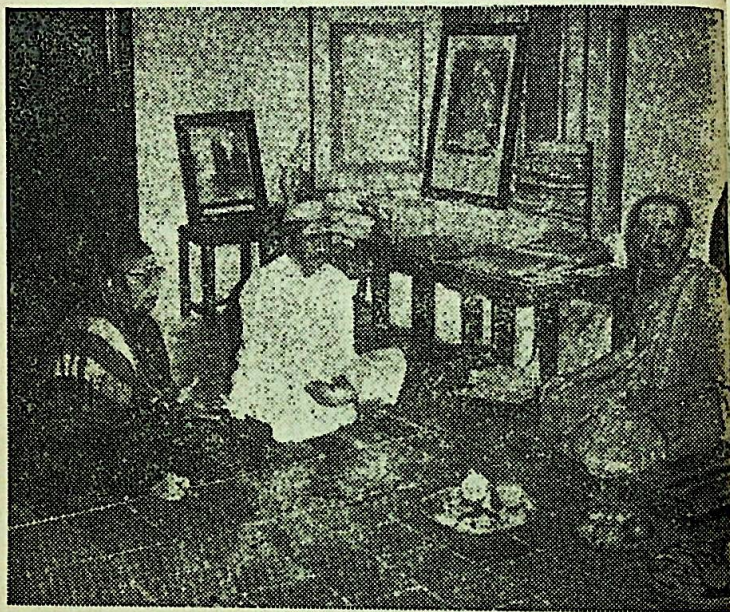
भारत के उपराष्ट्रपति श्रीमान् बि. डि. जत्ती दंपति – गुरुवर्य
विचार-विनिमय करते हुए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुरुवर्य की चातुर्मास्य दीक्षा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
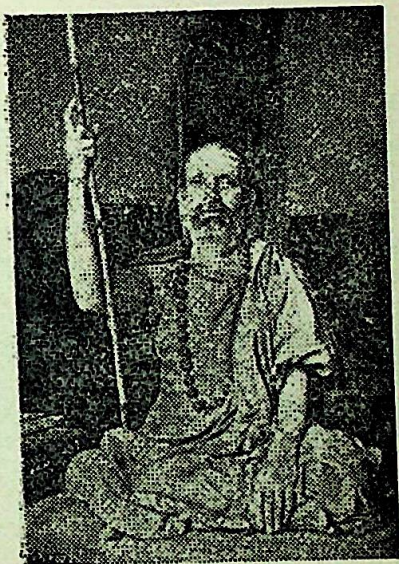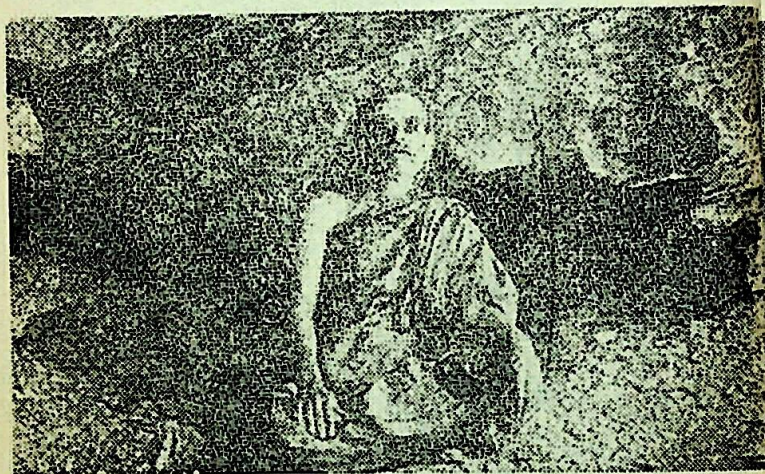
व्यासगुहा के सामने गुरुवर्य
(हिमालय पर्वत पर)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुरुवर्य बदरीनाथ में अनुयायियों के साथ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
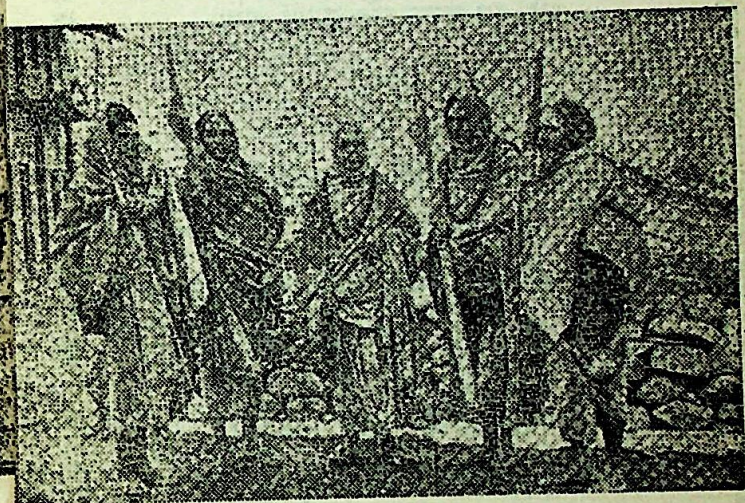
ॐ

श्री गुरु चरणारविन्दाभ्यां नमः

*

मा गच्छ त्वमितस्ततो गिरिश

मय्येव वासं कुरु ।

स्वामिन् ! आदि किरात मामक

मनः कांतार सीमांतरे ।।

वर्तन्ते बहुशो मृगा मदजुषो

मात्सर्यं मोहादयः ।

तान्हत्वा मृगयाविनोद रुचिता

लाभं च संप्राप्स्यसि ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रृंगेरी का नाम सुनते ही मन मस्तिष्क एक हो कर उस तपोभूमि में विहार करने लगते हैं। महराज रोमपाद की याद हो आती है। वर्षाभाव जन्य अकाल पीड़ित जनता की दयनीय दशा स्मृति-पटल पर अंकित होती है। उन दिनों उस पीड़ित जनता के दुःख-दरद का निवारण कर, दयार्द्र हो उन्हें अकाल से बचाने के एक मात्र उद्देश्य से वहाँ तक भागनेवाले दयालु तपस्वी ऋष्यश्रृंग महर्षि की दयार्द्र-मूर्ति प्रत्यक्ष होती है। देव-मानुष संयोग-जन्य उस अतिमानव की साकार मूर्ति चित्त पटल पर अभय-मुद्रा में आशीश देते खड़ी दृष्टि-गोचर होती; है। ऐसा भान होता है कि उस पर्वता-विष्ट भूमि के बीच में खड़े होकर मानव हित-साधन की महान् प्रेरणा से अभिभूत वह महात्मा अब भी उन पहाड़ी टीलों पर विचरण कर रहे हैं। उस महात्मा के चरण-रज से पवित्रीकृत वह सारा पार्वत्य-प्रदेश "श्रृंगगिरि" के नाम से अभिहित है।

चारों ओर पहाड़ों और पहाड़ी टीलों से घिरा हुआ वह स्थान अपनी प्राकृतिक सुंदरता को लेकर विराज रही है। सह्याद्रि-पर्वत-माला से प्रवहित होकर उस महात्मा श्रृंगी ऋषि के पावन चरणों को धोती हुई तुंगा माई अपनी बहन भद्रा से मिलनें को आतुर हो कर बहती है। तुंगा-माई श्रृंगीमहर्षि के पद-रज से पुनीत समस्त प्रदेश को हरा-भरा करती हुई, चतुर मालिन की तरह सजाती हुई, चित्ताकर्षक बना रही है। माता की गोद में खिलवाड़ करनेवाले बच्चे की तरह प्रकृति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के सौंदर्य से सजी, पयस्विनी देव-भू की गोद में एक छोटी बस्ती है जिसे "श्रृंगगिरि" कहते हैं। यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता सात्विक है।

प्रकृति सौंदर्य की सार्थकता इसी में है कि वह जीव राशि में सात्विकता का प्रचोदन करें। वन्य-पशुओं तक में सात्विकता का संचार हो। अपने सहज स्वभाव को भी भूलकर परस्पर सौहार्द से जिये-इसी में भव्यता है। श्रृंगगिरि की प्राकृतिक सुंदरता में ऐसी भव्यता परिलक्षित होती है। सर्प-सालूर (मंडूक) का सहानुभूतियुक्त साहचर्य असंगत दिखने पर भी असंभव नहीं। स्वभावगत सहज गुणों में समानता स्थापित होने पर न राग रहता है न द्वेष। रागद्वेष रहित मानसिक स्थिति बुद्धिजीवी मानव में अभ्यास-साध्य है; परंतु वन्य पशुओं में प्राकृतिक प्रभाव से निर्वैर जीवन यापन संभव हो सकता है। यह तप का प्रभाव है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२

आदिशंकर भगवत्पाद ने अपने भ्रमण-मार्ग में ऋष्यश्रृंग महर्षि के तपःपूत इस स्थान में परस्पर वैषम्य से मुक्त वन्य जीवन का प्रत्यक्ष दर्शन किया। तपस्साधना के लिए उपयुक्त प्राकृतिक सन्निवेश पाकर यहीं से अपने आम्नाय पीठों की नींव डाली।

आचार्य शंकर द्वारा स्थापित आम्नाय पीठ चार हैं। ये चार दृष्टिगोचर आम्नाय कहलाते हैं। इन चारों के अलावा तीन और आम्नाय हैं – "ऊर्ध्वाम्नाय – आत्माम्नाय – निष्कलाम्नाय" जो केवल ज्ञानाम्नाय के नाम से अभिहित हैं। और ये केवल ज्ञानगोचर हैं।

इन चारों आम्नाय पीठों के चार महावाक्य हैं – वे यों हैं :- "अहं ब्रह्मास्मि, तत्वमसि, अयमात्मा ब्रह्म, प्रज्ञानं ब्रह्म।" ये चारों महावाक्य चार वेदों से उद्धृत हैं। इन चारों महावाक्यों की अर्थव्याप्ति का घेरा समस्त विश्व को अपने में समा ले सकता है। इस चिरन्तन सत्य का साक्षात्कार करनेवाले महात्माओं की एक लंबी परम्परा अनादि काल से आज तक अबाध गति से चली आयी है। इन महत्माओं की ज्ञानयात्रा "अहं ब्रह्मास्मि" तक पहुँच कर वहीं रुकी नहीं, आगे बढ़ी और "सर्वं खल्विदं ब्रह्म तक पहुँची। यह एक पीढ़ी की उपलब्धि नहीं। लगातार, कई पीढ़ियों की ज्ञान-यात्रा की उपलब्धि है। इस उपलब्धि को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केन्द्र बना कर कई विशिष्ट प्राप्ति प्रणालियाँ प्रस्तुत हो गयी। इन प्रणालियों की शाखा-प्रशाखाएँ निकलकर एक विशाल वट वृक्ष की तरह फैल गयी। छोटी-मोटी प्रणालियों का निवारण करते हुए और आवश्यक प्रतीत होने पर उन्हें भी आत्मसात् करते हुए इन प्रणालियों में समन्वय स्थापित करना एवं असली आदर्शों की ओर जन-जीवन का उन्नयन करना एक असाधारण कार्य है। इस असाधारण कार्य की साधना में हाथ डालना असाधारण व्यक्तित्व से ही संभव है।

महर्षि ऋष्यश्रृंग के तपःप्रभाव से प्रभावित इस "श्रृंग गिरि" में महर्षि विभांड के समय से ऐसे ही असाधारण तपस्वी व्यक्तित्वों की एक अटूट परंपरा चली आयी है। महर्षि विभांडक ऋष्यश्रृंग के पिता थे।

त्रैगुण्य युक्त भौतिक सृष्टि में समान-धर्मिता का अन्वेषण कर उस समान-धर्म को सृष्ट जगत् में प्रतिष्ठित कर इसी समान-धर्मिता की नींव पर विभिन्न गुण-धर्मोंवाली जीव कोटी में सौहार्द स्थापित करना असाधारण तपःप्रभाव से ही साध्य है। इस साध्य की साधना में सिद्ध होना, सर्वत्र एकात्मिकता का अनुभव करना - कराना, व्यक्त में अव्यक्त का दर्शन पाना विशिष्ट साधना की ही उपलब्धि है। इस तरह की उपलब्धि को सृष्टि में व्याप्त कर जनमन में प्रतिष्ठित करना और तद्द्वारा रागद्वेषयुक्त सहज सौहार्द्र भाव को विकसित कर वैषम्य मिटा देना, तथा सहजीवन में लोकमानस को प्रवृत्त करना, इसी में तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस उपलब्धि की सार्थकता है। इस उपलब्धि से भूमंडल पर स्वर्गराज्य को प्रतिष्ठित कर सकने की क्षमता तुंगा-तीर के इन तपस्वियों में प्रभूत मात्रा में है।

भारत की तपोभूमि ने हमेशा से इस बात का प्रयत्न किया है कि नर को नारायण कैसे बनाया जाय? नर-नारायण के भेद को मिटाकर सर्वत्र सब में नारायण का दर्शन कैसे हो? भारतीय मेधा ने इस मूलभूत प्रश्न पर आमूलाग्र विचार किया और अंततोगत्वा कुछ विशिष्ट निषकर्षों पर पहुँच कर आगे के विचारकों के लिए एक सुदृढ नींव डाली।

इसी सुदृढ नींव पर भारतीय चिंतन-सौध का निर्माण हुआ है। आगे के मनीषियों नें इस सौध के अंग-प्रत्यंग का सूक्ष्म निरीक्षण कर इसे विशाल और आकर्षक बनाया। संसार की समस्त जन जातियों ने खास कर बुद्धिजीवियों ने इस भारतीय मनीषा के सामने सर झुकाया। इस तरह इस चिंतन-सौध को आकर्षक रीति से ऊंचा उठानेंवाले महा-पुरुषों की कड़ी में शंकर भगवत्पाद भी एक हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३

आर्य साहित्य का प्राचीनतम काल वैदिक युग है। इस वैदिक युग के मंत्रद्रष्टा ऋषियों नें तपोवनों में बैठकर इस चिंतन-सौध की नींव का प्रस्तर-विन्यास किया। इन महानुभावों की पीढ़ियाँ प्रस्तर के साथ प्रस्तर जोड़ते आये। इस सौध में कई खंडों का निर्माण किया और ये पीछे चल कर षड्दर्शनों के रूप में प्रस्फुटित हुए। कालांतर में न्याय-सूत्र लिखकर अक्षपाद गौतम नें न्याय-दर्शन का विकास किया, महर्षि काणादकाश्यप ने वैशेषिक दर्शन का, कपिल मुनी ने सांख्य-दर्शन और महा भाष्यकार पतंजली ने योगदर्शन का, महर्षि जैमिनि ने मीमांस-दर्शन का, इस तरह इन शाखाओं का विकास किया। बादरायण व्यास ने वेदांत-दर्शन को व्यापक एवं सर्वग्रासी दृष्टि से विकसित किया। तत्कालीन प्रचलित सभी दर्शनों का महर्षि व्यास ने अपने वेदांत दर्शन में समन्वय किया। इसी कारण से भारतीय आध्यात्म शास्त्र का मकुट-मणि है यह वेदांत-दर्शन। वैदिक धर्म के स्वरूपानुसंधान के लिए ये सभी दर्शन उपादेय हैं। इसी कारण से आचार्य शंकर ने अपने लिए इसी दर्शन को चुना। इस वेदांत दर्शन के अनुसंधान में उन्होंने अपनी सारी शक्ति लगा दी।

सोलह वर्ष की अल्पायु में प्रस्थान-त्रयी के सर्व प्रथम भाष्यकार बननेवाले भगवत्पाद शंकर ही हैं। यह महात्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अलौकिक मेधा संपन्न थे। इन की अलौकिक विद्वत्ता, सर्वातिशायिनी शेमुषी, असाधारण तर्क-पटुता देखकर किसी भी आलोचक का मस्तक गौरव से इनके सामने नत हो जाता है। ३२ वर्ष की स्वल्प आयु में आचार्य ने वैदिक धर्म के उद्धार एवं प्रतिष्ठा का जो महनीय कार्य संपादन किया वह अद्वितीय है। इन महानुभाव के विषय में यह प्रसिद्ध है –

अष्ट वर्षे चतुर्वेदी द्वादशे सर्वशास्त्रवित्।
षोडशे कृतवान् भाष्यं द्वात्रिंशे मुनिरभ्यगात्॥

आचार्य शंकर ने अपनी असाधारण विद्वत्ता एवं तर्क-शक्ति से अद्वैत-भाव की प्रतिष्ठा की। सारे विश्व में व्याप्त ब्रह्म चैतन्य को प्रमाणों द्वारा लोक जीवन में समन्वित कर स्वानुभूति (स्वानुभव) से, लोक के समक्ष एक महान् आदर्श प्रस्तुत किया। उनका यह आदर्श बुद्धिग्राह्य होने के कारण साधारण व्यक्ति परिश्रम से ही इसे समझ सकता है। आचार्य शंकर की दृष्टि में सर्वत्र व्याप्त ब्रह्म भौगोलिक सीमाओं से घिरा या आबद्ध नहीं। वह देश-काल की सीमाओं से अतीत और सर्वत्र विद्यमान है। इस उपग्रह भूगोल में प्राकृतिक कारणों से अलग अलग भूभाग विभिन्न नामों से अभिहित हैं और सर्वत्र मनु की संतान का ही निवास है। प्राकृतिक परिसर प्रभाओं से आचार विचार और व्यवहारों में भिन्नता का दर्शन होने पर भी मानवीयता सब में समान है। इसी समानता पर आर्षेय वैदिक धर्म प्रतिष्ठित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। इस दृष्टि से मानवता ही मनु के संतान मानव का समान-धर्म है। प्रत्येक के लिए अलग अलग 'ब्रह्म' या परमात्मा नहीं हो सकता। यदि इस तरह 'ब्रह्म' या परमात्मा भिन्न भिन्न हुआ तो उनकी अखंडता समाप्त हो जाती है और व्यापकता भी समाप्त हो जाती है। बौद्ध, जैन, चार्वाक आदि मतों ने वैदिक आर्षेय धर्म पर आक्रमण किया और परंपरागत वैदिक-धर्म को यथा-शक्ति तेजोहीन बनाने का सतत प्रयत्न भी किया। इन के अलावा अन्यान्य क्षुद्र मतों ने भी सिर उठा कर वैदिक धर्म की जड़ तक को हिलाने का यत्न किया। परंतु वे सब मिल कर भी इस सनातन वैदिक धर्म को मिटा न सके। इस से स्पष्ट है कि सभी मत-धर्मों को कड़ा जवाब देने की और इन सब को आत्मसात् कर लेने की शक्ति इस सनातन वैदिक धर्म में है। अज्ञान ग्रस्त लोक जीवन में तात्कालिक रूप से इन अवैदिक मत-धर्मों ने अपना प्रभाव भले ही डाला हो विवेक द्वारा प्रज्ञा-चक्षु जब खुलेंगे तब इस प्रभाव का निरसन स्वयं हो जाएगा। ऐसे ही प्रज्ञा-चक्षु आचार्य शंकर थे।

इस उदात्त आदर्श को व्यापक रूप से प्रतिष्ठित कर लोक जीवन को उदात्त बनाने के ही विचार से आदि गुरु शंकर ने सर्व प्रथम ऋष्यशृङ्ग महर्षि के तपः प्रभाव से पुनीत शृङ्ग-गिरि क्षेत्र में सर्व प्रथम आम्नाय पीठ का स्थापन किया। कर्नाटकस्थ इस शंकर पीठ को दक्षिणाम्नाय के नाम से लोग पहचानते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

४

अल्पवयस्क आचार्य शंकर ने केवल सोलह वर्ष की आयु में प्रस्थान-त्रयी का भाष्य लिखकर तत्कालीन सम-समायिक प्रकांड विद्वानों को मंत्र-मुग्ध कर दिया। श्री शंकर भगवत्पाद के दीक्षागुरु गोविंद भगवत्पाद थे।

ऊपर कहा गया है कि बादरायण व्यास ने ब्रह्म-सूत्रों का प्रणयन किया। कालांतर में उपनिषदों के सिद्धांतों में आपाततः विरोधों के परिहार करनें की तथा उनमें एक वाक्यता लानें की आवश्यकता प्रतीत होनें लगी। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए बादरायण व्यास ने ब्रह्मसूत्रों का प्रणयन कियां।

गौतम ने प्रमाण द्वारा अर्थ परीक्षण किया और काणाद ने शब्दार्थ स्वरूप का निर्णय किया। कपिल ने उपनिषद् सिद्धांतों का शास्त्रीय विवेचन किया। पतंजली ने अपने 195 योग सूत्रों द्वारा शरीरविज्ञान एवं सूक्ष्म-मनोविज्ञान का विवेचन किया। जैमिनि नें बारह अध्यायों के 909 अधिकरणों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विभक्त 2644 सूत्रों द्वारा भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि से शब्द-मीमांसा की, अभिहितान्वयवाद एवं अन्विताधानवाद प्रस्तुत कर स्फोट-वाद एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण-आदियों के सहारे कर्म पर जोर डाला। इन पांचों दर्शन-धाराओं में लक्षित औपनिषदिक सिद्धांतों के पारस्परिक अनैक्य को मिटाकर एक वाक्यता लाने का श्रेय वेदांत-दर्शन के सूत्रकार महर्षि बादरायण व्यास को है।

महर्षि व्यास ने 'नारायणं पद्मभवं वसिष्ठं शक्ति च तत्पुत्र पराशरंच'– इस परंपरा से प्राप्त दार्शनिक धारा को व्यास ने महर्षि शुक के द्वारा गौडपाद और उनके द्वारा गोविंद योगींद्र तक को प्रवहित किया। इसे शंकराचार्य नें अपने सच्छिष्यों द्वारा सर्वत्र प्रवाहित कर जनमन को प्लावित किया।

भौतिक भूमि पर मानवता को समान स्तर पर प्रतिष्ठित करना असंभव है। आध्यात्मिक एकता की नींव पर मानव-मानव की भिन्नता मिटाकर समान स्तर पर मानवता की प्रतिष्ठा सहज हो सकती है। सर्वत्र व्याप्त आत्मतत्त्व अनेक नहीं हो सकता और भिन्न-भिन्न भी नहीं हो सकता। वह देश कालातीत सत्य है। इस सत्य की प्रतिष्ठा लोक-जीवन में करना, तद्वारा मानव में मानवता को विकसित करना, अन्य दर्शनों की अपेक्षा वेदांत दर्शन से ही विशेष रूप से साध्य है। इसी सनातन सत्य की परंपरा को व्यापक रूप से लोक-मानस में अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए अपने चार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिनिधि शिष्यों को चार धामों में प्रतिष्ठित कर कार्य संचालन की व्यवस्था इस अवतारी पुरुष आचार्य शंकर ने की। इस अवतारी पुरुष के विषय में यह प्रसिद्ध है – 'अष्टवर्षे चतुर्वेदी द्वादशे सर्वशास्त्रवित्। षोडशे कृतवान् भाष्यं द्वात्रिंशे मुनिरभ्यगात्'।।

पश्चिम में द्वारिका, उत्तर में बदरिकाश्रम, पूर्व में जगन्नाथ और दक्षिण में शृङ्गगिरि – इन चारों स्थानों में क्रमशः सर्वश्री पद्मपाद, तोटक, हस्तामलक और सुरेश्वर को बिठाया। इन महा-पुरुषों के द्वारा इस तत्थ्य-ज्ञान के वितरण की व्यवस्था की। ये चारों धाम ऐसे विद्युत् उत्पादन केन्द्र हैं कि इन से जन्य विद्युत् ज्ञानवाहिनियों द्वारा लोक-जीवन में प्रकाशित हो कर अज्ञान तिमिर को दूर करने में शक्त है।

इन चारों धामों में आचार्य शंकर की एक अटूट परंपरा आज भी क़ायम है। शृङ्गगिरि वह प्रथम केन्द्र है, जहाँ से यह ज्योति किरण निस्सृत हुई थी। इस केन्द्र से आज भी प्रभूत-मात्रा में अध्यात्म-विद्युत् का उत्पादन उसी परिमाण में हो रहा है। यहाँ श्री शारदाजी की सजीव-मूर्ति, समाधिस्थ विद्याशंकर एवं शंकराचार्य का सान्निध्य, परंपरानुगत गुरु-साहचर्य तथा उनकी तपःपूत वाणी से प्रभावित और उन्हीं के करकमल संजात आचार्य सुरेश्वर विद्यमान हैं। यहीं कर्नाटक साम्राज्य के शिलान्यास करनेवाले आचार्य विद्यारण्य हैं। इन सभी ऐतिहासिक प्रमाणों से स्पष्ट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है कि महर्षि ऋष्यश्रृङ्ग की इस पवित्र तपोभूमि ने केवल आध्यात्मिक केन्द्र के रूप में विकसित हो कर कालक्रम में भारत के इतिहास के निर्माण में भी पूर्ण मनोयोग दिया और आज भी देता रहा है। तुंगा की तरंगें इन तेजस्वी तपस्वियों के तपोजन्य प्रभाव का वहन करती हुई दूर दूर के प्रदेशों को प्रभावित कर रही हैं, आज भी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

५

श्री शंकरभगवत्पाद नें ज्ञान प्रसार के कार्य को संपन्न करने के लिए चारों धामों में चार आध्यात्मिक केंद्रों की स्थापना की -- यह तो पहले ही बताया जा चुका है। इन्हें आम्नाय पीठ कहते हैं। शृङ्गगिरि भगवत्पाद शंकर द्वारा स्थापित प्रथम आम्नाय पीठ है, जिसे दक्षिणाम्नाय शारदा पीठ कहते हैं। इस शृङ्गगिरि पीठ के निर्वहण का उत्तरदायित्व भगवत्पाद ने अपने चार ज्ञानि शिष्यों में से एक श्री सुरेश्वर आचार्य को सौंपा। योग्य गुरु के योग्य शिष्य ने अपने कर्तव्य भार को दक्षता के साथ निर्वहण किया। श्री सुरेश्वराचार्य के पश्चात् विद्याशंकर तक सर्वश्री नित्यबोध, ज्ञानघन, ज्ञानोत्तम, ज्ञानगिरि, सिंहगिरि, ईश्वरतीर्थ, नृसिंहतीर्थ तक की अक्षुण्ण गुरुपरंपरा चली आयी। अब तक नौ आचार्यों ने शंकर भगवत्पाद के कार्य को चलू रखा। श्री नृसिंहतीर्थ के पश्चात् श्री विद्यातीर्थ ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया।

विद्याशंकरतीर्थ साधक नहीं, सिद्ध पुरुष थे। त्रिकाल दर्शी इन महात्मा ने अपने संपूर्ण जीवन को योगमय बना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिया था। इन तेजस्वी महापुरुष के और विद्याशंकरतीर्थ के पूर्व अनेक गुरुओं ने सिंहगिरि के एकांत स्थान में शिष्यों के साथ कुछ काल तक साधना एवं अध्यायन के कार्य में निरत रहकर, शंकर भगवत्पाद के कार्य को आगे बढ़ाने लायक कुछ शिष्यों को तैयार किया। उनके शिष्यों में भारतीकृष्णतीर्थ एवं विद्यारण्य प्रमुख हैं। श्री विद्याशंकर-तीर्थ योग-समाधि में लीन हो कर आत्म-साक्षात्कार के आनंद में लीन हो जाने की सिद्धता में अंतर्मुखी होने लगे तो सारा कार्य-भार तात्कालिक रूप से श्री भारतीकृष्णतीर्थ को संभालना पड़ा। श्री भारतीकृष्णतीर्थ और विद्यारण्य दोनों ने श्री मठ संस्थान के कार्य निर्वहण के साथ आदि शंकर प्रवर्तित महान् कार्य को आगे बढ़ाया। श्री भारतीकृष्णतीर्थ को अंतर्मुखी पाकर सारा उत्तरदायित्व श्री विद्यारण्य को ही अपने ऊपर लेना पड़ा। श्री विद्यारण्य की प्रतिभा, क्रियाशीलता, कार्य-दक्षता एवं अपार व्यावहारिक ज्ञान का सर्वतोमुखी परिचय विजयनगर के कर्नाटक साम्राज्य की स्थापना में मिलता ही है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

६

यह निश्चित बात है कि समय समय पर भारत के धर्म-मतों को राजाश्रय पाकर पनपने का अवकाश मिलता रहा। कभी वैदिक धर्म राजाश्रय पाकर पनपा तो कभी बौद्ध कभी जैन और कभी शैव तो कभी वैष्णव। परन्तु कर्नाटक प्रदेश ही एक ऐसा प्रदेश है, जहाँ इन सभी धर्म-मतों का सुंदर समन्वय हुआ है। विंध्योत्तर प्रदेश से सिंहल तक की यात्रा बौद्ध मतने की, कर्नाटक से हो कर। समसामयिक जैन मत ने आकर कर्नाटक में आश्रय पाया और पनपा। जैनियों का तो साहित्य कन्नड़ में प्रभूत मात्रा में है ही। बौद्ध व जैन राजाश्रय और लोकाश्रय पाकर पनपे। परन्तु बौद्ध का संकल्प सिंहल तक जाने का था। बौद्ध व जैन मत अपने अपने समय के लोक धर्म को अपनी अपनी दृष्टि से समन्वित कर लोक प्रिय बनाने की कोशिश कर रहे थे। कालांतर में बौद्ध मत प्रधानतया चार शाखाओं में विभक्त हो कर भारत के बाहर भी प्रवेश कर चुका था। वज्रयान बौद्ध बंगाल के पाल राजाओं के आश्रय में शाक्तेय तंत्रों के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रभाव से प्रभान्वित होकर क्रियाशील रहा। अन्य तीन शाखाएँ हीनयान, महायान और थेरवादी भारतीय सीमाओं को लाँघकर अन्य देशों में विकास पाता रहा।

जैन प्रधानतया पाँच स्वरूपों में विभक्त हुआ। दिगंबर, श्वेतांबर, स्थानकवासी, मंदिरवासी और तेरहपंथी। विभक्त होने पर भी यह लोकाश्रय में भारत की सीमाओं का उल्लंघन कर अपनी जन्म-भूमि से विदा न हुआ। एक तरफ ये अवैदिक मत-दर्शनों का स्वतंत्र विकास हो रहा था तो दूसरी तरफ़ वैदिक-तत्व पर आधारित धर्म विचारक-मेधा ने षड्दर्शनों का विवेचन कर विकास भी किया था। इन वैदिक एवं अवैदिक धर्म धारा व दार्शनिक विचार-धाराएँ समानांतर में प्रवहित होकर लोक मानस को नाना रूपों में प्रभावित किया था। यत्र तत्र थोड़े बहुत परिमाण में समन्वय साधना भी होती रही। परन्तु इस समन्वय का विशिष्ट रूप जितना कर्नाटक में स्पष्ट दिखता है उतना अन्यत्र नहीं। कुल मिलाकर कहना हो तो यह कहा जा सकता है कि कर्नाटक सर्व-धर्म समन्वय-भूमि है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

७

इस में कोई आश्चर्य नहीं कि शंकर भगवत्पाद ने सर्व-प्रथम इसी कर्नाटक के शृङ्गगिरि क्षेत्र में प्रथम आम्नाय पीठ स्थापित किया। जैसे सर्व-धर्मों की समन्वय भूमि कर्नाटक है वैसे ही सर्व-दर्शन समन्वय का भी यह उपयुक्त क्षेत्र है। जिस अद्वैत दर्शन की शंकर भगवत्पाद ने लोक मानस में प्रतिष्ठा की वह सर्वोपरि है।

संभवतः उस युवा सन्यासी ने जगत् के समक्ष जो सिद्धांत और आदर्श उपस्थित किया, वह निर्विवाद रूप से अकाट्य एवं निरपवाद रूप से बौद्धिक जगत् के सामने समस्यात्मक होकर हिमालय की तरह अटल खड़ा है। अस्तु;

श्री श्री विद्यारण्य ने शंकर भगवत्पाद के इस महान् कार्य को व्यापक रूप से धार्मिक एवं व्यावहारिक क्षेत्रों में प्रतिष्ठित किया। श्री विद्यारण्य के पश्चात् श्री चन्द्रशेखर भारती, श्री नरसिंह भारती, श्री पुरुषोत्तम भारती, श्री शंकरा-नंद भारती, द्वितीय चन्द्रशेखर भारती, द्वितीय नरसिंह भारती,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्वितीय पुरुषोत्तम भारती, श्री रामचन्द्र भारती, तृतीय नर-सिंह भारती, चतुर्थ नरसिंह भारती, पंचम नरसिंह भारती - क्रमशः इन महानुभाव तपस्वियों ने श्री शंकर भगवत्पाद के इस महान् संदेश को सर्वत्र व्याप्त करने के कार्य को आगे बढ़ाया। केवल आगे बढ़ाया ही नहीं उस बुद्धिग्राह्य तत्व को सार्वभौमिक बनाकर लोकमानस में प्रतिष्ठित किया। इस महान् कार्य को संपन्न करने के लिए इन तपस्वियों ने यथाशक्ति भारत के विभिन्न भागों में भ्रमण भी किया। इस भ्रमण के कारण लोक मानस में स्वच्छ और समन्वित धार्मिक भाव धारा बहने लगी। इस भाव-धारा में लोक-मानस प्लावित होकर लहलहा उठा। राजा-रंक, अमीर-फकीर, विरक्त-आसक्त, जोगी-जंगम, गृहस्थ-वानप्रस्थ सभी तरह के लोग यत्र-तत्र इस आध्यात्म-भूमि पर बिना किसी भेदभाव के अखंड ब्रह्म सत्ता का अनुभव करने लगे। इस प्रभाव से तत्कालीन राज सत्ता भी प्रभावित हुए बिना न रही। अनेक धर्म होने पर भी तत्व एक है, उस तत्व-ज्ञान की साधना द्वारा ऐहिक एवं पारलौकिक सुख शांति प्राप्त होती है; इस कारण धर्म-समन्वित जीवन के पोषण का उत्तरदायित्व राज सत्ता को अपने ऊपर लेना आवश्यक भी है। जब कि ऐसा वातावरण बना तो इस तरह यत्र-तत्र फैले विचारों को संगठित और समन्वित कर संचालित करने के लिए धर्मज्ञ तपस्वियों की देखरेख एक सामयिक आवश्यकता थी। इस महान् कार्य में आध्यात्म साम्राज्य चक्रवर्ती की तपश्शक्ति के साथ भौतिक राज सत्ता स्वयं अनाहूत ही सम्मिलित हुई।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अध्यात्म एवं भौत सत्ताओं का संतुलित समन्वय हुआ। इस तरह ऐहिक एवं आमुष्मिक भावधाराएँ लोक जीवन में समन्वित हुई। असल में ऐहिकता के प्रति उदासीन होकर आमुष्मिकता के प्रति आसक्त होना अथवा आमुष्मिकता से उदासीन रहकर केवल ऐहिकता ही की साधना में रत होना मानव प्राणी के सहज विकास के लिए वाँछनीय नहीं हो सकता। शासन-सत्ता धर्म-निरपेक्ष राज्य की बात सोचने पर भी भारतीय मनीषा ऐसे राज्य या स्थिति की कल्पना भी नहीं कर सकती।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

८

दूरदर्शी भविष्यद्रष्टा ऋषि मुनियों का तपो जन्य प्रभाव एकदम भारत की भूमि पर से लुप्त नहीं हो सकता। श्री शंकर भगवत्पाद ने अपनी तपस्या विद्वत्ता एवं मौलिक चिंतन, व्यावहारिक चेतना आदि के द्वारा जैसा समन्वय मार्ग स्थिर किया था उसी लीक पर चलकर समय-समय पर आवश्यकतानुसार राज्य और जनता को सन्मार्ग पर चलाने का गुरुतर भार आधिकारिक दृष्टि से शृङ्गगिरि के पीठाधिपों पर श्री श्री स्वामी विद्यारण्य के समय से अधिकाधिक रूप से पड़ने लगा था। इस गुरुतर उत्तरदायित्व का निर्वहण करने के लिए यत्र-तत्र शृङ्गगिरि की आचार्य-परंपरा ने जनता की सहूलियत को दृष्टि में रख कर शंकर-पीठ की शाखाओं की स्थापना की। परंतु इस तरह से स्थापित गुरुमठ केवल जहाँ तहाँ धर्मोपदेश देने मात्र के लिए थे, वे आम्नाय पीठ नहीं। वे आम्नाय पीठ के अधीन धर्म मार्ग में दिशादर्शन देने के मात्र के लिए हैं। इस तरह धर्म साम्राज्य का भी विस्तार हुआ। यों विस्तृत इस धर्म राज्य पर धर्मानुशासन करने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एवं राज सत्ता को धर्मनिष्ठ बनाये रख कर लोक जीवन को संचालित करने का काम इन आम्नाय पीठों के पीठाधिपों को ही संभालना पड़ा। इन के लिए क्षेत्र निर्दिष्ट था। यों तों विरक्त संन्यासी को मठ की सीमाओं में बन्धे रहने की आवश्यकता ही क्या है? वे तो जंगम कल्पतरु हैं। जब जहाँ चाहे आ-जा सकने के लिए स्वतंत्र हैं। जब किसी मठ आम्नाय पीठ से बंध जाते हैं तब उन्हें सब दृष्टियों से अपने क्षेत्र की व्याप्ति के अनुसार तथा आश्रित शिष्य मंडली की आवश्यकताओं के मुताबिक सामाजिकता को दृष्टि में रखते हुए धर्म-कर्म की व्यवस्था देनी पड़ती है। आम्नाय पीठ के आदर्श उद्देश्य तथा नियमित अनुष्ठान आदि लोककल्याण कार्यों का भार-निर्वहण करना पड़ता है। यह सारा उत्तरदायित्व पीठाधिपति को वहन करना एक तरह से निर्दिष्ट कर्तव्य बन जाता है।

इस गुरुतर कर्तव्य-भार को श्री विद्यारण्य गुरुवर से लेकर पंचम नरसिंह भारती तक की गुरुपरंपरा नें नाना भूभागों में श्री शंकर भगवत्पाद के संदेश को पहुँचाया, और सद्विद्या प्रचार द्वारा सार्वजनिकों में सद्भाव की प्रतिष्ठा की। इस उत्तरदायित्व के निर्वहण के लिए अभिनव नरसिंह भारती, श्री सच्चिदानंद भारती, श्री षष्ठ नरसिंह भारती. द्वितीय श्री सच्चिदानंद भारती, श्री अभिनव सच्चिदानंद भारती, सप्तम श्री नरसिंह भारती, तृतीय श्री सच्चिदानंद भारती. द्वितीय श्री अभिनव सच्चिदानंद भारती, अष्ठम श्री नरसिंह भारती, श्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सच्चिदानंद शिवाभिनव नरसिंह भारती, तृतीय श्री चंद्रशेखर भारती—इन अवतारी महात्माओं ने अपनी तपस्या, विद्वत्ता, प्रतिभा और दक्षता एवं कार्यकुशलता द्वारा समय-समय पर देश के दक्षिणोत्तर-पूर्व-पश्चिम प्रदेशों में आवश्यकतानुसार भ्रमण करते हुए, सद्धर्म का प्रसार करते हुए आम्नाय पीठ की ख्याति बढ़ाने के साथ साथ विभिन्न स्थानों में स्थानीय जनता की इच्छा के अनुसार मठ-मंदिरों की एवं सार्वजनिकों के उपयोग के लिए आवश्यक प्रवचन-मंदिरों की प्रतिष्ठा की। यत्र-तत्र सहूलियतों और जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप अध्ययन अध्यापन आदि की भी व्यवस्था की।

इस इतनें बड़े उत्तरदायित्व के निर्वहण के लिए उपयुक्त एवं इस मठाम्नाय पीठ व्याख्यान सिंहासन के लिए उत्तराधिकारी का चुनाव करना आसान काम नहीं। चुने जाने के पूर्व और पश्चात् उस भावी आचार्य को कड़ी परीक्षाएँ देनी पड़ती हैं। इन सभी तरह की परीक्षाओं में सही उतरने के पश्चात् उस भावी उत्तराधिकारी को शिक्षित करने का श्रीगणेश होता है। योग्य गुरुओं द्वारा और स्वयं पीठस्थ आचार्य द्वारा शिक्षण कार्य होता है। तब उनकी योग्यता, विषय ग्रहण शक्ति, संयमशीलता, व्यवहार कौशल्य, धर्म-दर्शन की साधना, अनुष्ठान आदि आदि अनेक बातों पर निगरानी रखी जाती है। इन सब बातों में खरे उत्तरें तब उनके उच्च शिक्षण की व्यवस्था की जाती है। इस अध्ययन की दशा में भी उनके नित्य-कर्म और दिनचर्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर आचार्य की तथा अध्यापकों की कड़ी नजर रहती है। इस तरह आमूलाग्र सभी बातों पर दृष्टि रख कर उस भावी आचार्य को चुन लिया जाता है। तब जा कर पीठाधिपति बनने योग्य प्रतिभा, विद्वत्ता, दक्षता, कार्य-कुशलता, अनुष्ठान के प्रति निष्ठा, अध्यापन दक्षता आदि की जाँच की जाती है। इस तरह की कड़ी परीक्षा के बाद उस भावी आचार्य को संन्यास की दीक्षा दी जाती है। संन्यास में दीक्षित होने के बाद भी कई परीक्षाएँ देनी पड़ती है। इतने सारे कार्य का प्रयोग उपनीत बालक पर किया जाता है। स्वयं आचार्य की निगरानी में रह कर इन समस्त बातों में संन्यास स्वीकार तक के अर्से में, उस ब्रह्मचारी को परीक्षा देनी पड़ती है। संन्यास दीक्षा में दीक्षित होने के पश्चात् तत्संबंधी कर्मानुष्ठान तपस्या आदि साधनात्मक कृत्यों की ओर ध्यान रखा जाता है। इतना होने के पश्चात् ही यह आचार्य के करकमल संजात माने जाते हैं। तब जाकर वे पीठाधिपति बनने योग्य होते हैं। निर्विवाद रूप से वे पीठ के उत्तराधि-कारी होते हैं। तब उन्हें उपयुक्त समय पाकर सर्वाधि-कार सौंपा जाता है। इस तरह प्रत्येक पीठाधीश अपने उत्तराधिकारी को चुनते हैं। ये पीठाधीश ऊँचे दर्जे के तपस्वी होते हैं। इस कारण से उन्हें प्रज्ञा-चक्षु द्वारा भावी उत्तराधिकारी को चुनने में सहायता मिलती है। त्रिकालदर्शी तपस्वी के लिए यह कार्य असंभव नहीं। श्री सच्चिदानंद शिवाभिनव नरसिंह भारती जैसे त्रिकालदर्शी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तपस्वी महानुभाव के लिए अपने आस्थान विद्वान् श्री गोपालशास्त्रीजी के पुत्र नरसिंह को चुनने में कोई कठिनाई नहीं हुई थी। यही बालक नरसिंह पीछे चलकर श्री चंद्र शेखर भारती के अभिधान से व्याख्यान सिंहासन के उत्तराधिकारी बने।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

९

श्री चंद्रशेखर भारती स्वामी जी अपने गुरुवर्य श्री श्री सच्चिदानंद शिवाभिनव नरसिंह भारती महास्वामी जी के ही जैसे महान् तपस्वी थे। उन्होंने अपनी योग-साधना द्वारा अपूर्व सिद्धि प्राप्त की थी। बाल्यकाल से ही एकांतवास प्रिय ध्यान-निरत, चिंतनशील होने के कारण अपने गुरुवर्य के दिशा-दर्शन में शिक्षा-दीक्षा पा कर अल्प काल में ही सिद्ध पुरुष बने तो इस में आचार्य ही क्या है? अत्यल्प काल में ही उन्होंने स्व-स्वरूप का ज्ञान पाया था और आत्म साक्षात्कार के आनंद में विभोर हो कर मुक्त-पुरुष बन चुके थे। परंतु व्याख्यान पीठ के उत्तराधिकारी को तैयार किये बिना पीठ के उत्तरदायित्व से मुक्त नहीं हो सकते थे। इस लिए इस महापुरुष की आँखें उत्तराधिकारी को ढूँढ़ने में लगी थीं। भविष्य-द्रष्टा तपस्वी की पैनी दृष्टि थोड़े ही समय में अपने उत्तराधिकारी को पहचान गयी। अपनी आराध्य देवी श्री शारदा माँ का भी उन्हें संकेत मिल चुका था। फिर क्या? बेंगलूर के किसी माध्यमिक पाठशाला में पढ़ते रहनेवाले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बालक श्रीनिवास को बुला लाने की आयोजना बनी। आयोजना के कार्यान्वित होते देर न लगी।

किसी भी महत्कार्य के करने के लिए योग्य व्यक्ति। जब चुना होता है तब सब से पहली आवश्यकता उस व्यक्ति की मनोवृत्ति, ज्ञान पाने की इच्छा, ग्रहण शक्ति, निष्ठा, कर्मश्रद्धा, विचर जिज्ञासा, जन्म शुद्धि, परिवार की परंपरागत धर्मशीलता, न्यायनिष्ठा, परंपरागत अनासक्ति की भावना, नैतिक जीवन स्तर आदि बहुत-सी बातों की ओर ध्यान देना पड़ता है।

उन दिनों कैयु सीताराम शास्त्री जी का परिवार इन सभी दृष्टियों से खरा साबित हो चुका था।

श्री सीताराम शास्त्री जी एक बहुत बड़े पहुँचे हुए विद्वान् थे। धर्म शास्त्र एवं अन्यान्य शास्त्रों में उनका पांडित्य अगाध था। इस कारण से मैसूर राज्य के तत्कालीन राजसत्ता ने न्याय निर्णायक सलहाकार के रूप में भारतीय धर्म-शास्त्रों के अनुरूप न्याय निर्णय करने के लिए इन्हीं शास्त्री जी के परिवार से सब धर्म-शास्त्रों में निष्णात पंडित श्री श्रीनिवास शास्त्री जी को उपयुक्त समझा। अतः श्री शास्त्री जी को इस कार्य के लिए नियुक्त किया। ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त न्यायाधीश इन शास्त्री जी से श्रुति, स्मृतियों एवं धर्म-शास्त्र के आधार जानने के पश्चात् अपना अंतिम निर्णय, युक्त रीति से, देते। इस कार्य का उत्तरदायित्व इन्हीं शास्त्री जी पर अवलंबित था। श्री शास्त्री जी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की इस सेवा से भारतीय धर्म-शास्त्र एवं श्रुति-स्मृतियों का, यहाँ के न्यायालयों में अधिकृत रूप से, समावेश हुआ। भारतीय धर्म-शास्त्र एवं श्रुति-स्मृतियों की आवश्यकता न्याय-निर्णय के लिए एक अनिवार्य रूप में न्यायालयों को मानना पड़ा। इस पंडित प्रवर के समयोचित सलाह-सुझाव एवं शास्त्रीय विवेचन न्याय-निर्णय में बहुमूल्य सिद्ध हुए। इन शास्त्री जी की वंश परंपरा में श्री श्री विद्यातीर्थ गुरुवर्य अवतरित हुए।

इन्हीं श्रीनिवास शास्त्री जी के वंश में श्री रामाशास्त्री जी हुए। श्री रामा शास्त्री जी प्रसिद्ध विद्वान्, निष्ठावान्, श्रद्धालु और धार्मिक पुरुष थे। पंडित मंडली में आप सम्मान्य व्यक्ति माने जाते थे। आपके घर में ता. 13. नवंबर 1917 को एक बालक का जन्म हुआ। विधिवत् जातकर्म नामकरण आदि संस्कार संपन्न हुए। बालक का नाम श्रीनिवास रखा गया। युक्त वय में विद्याभ्यास का भी आरंभ हुआ। प्रारंभिक शिक्षा समाप्त कर माध्यमिक शिक्षण के स्तर तक पहुँचे ही थे, इसी अर्से में तपस्वी महात्मा श्री चंद्रशेखर भारती ने संदेश भेज कर बालक को बुलवानें की बात सोची। यह संभवतः माँ शारदा का ही आदेश था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१०

"होनहार बिरवान के होते चीकने पात" – बा
श्रीनिवास बचपन से ही चिंतन और मननशील थे। गु
का संदेश, एक दैवी योजना, थी। आम तौर पर क्रीड़ा
बचपन की अवस्था में बालक खेल को अधिक और
विषयों को कम महत्व देते हैं। यह सहज और स्वाभा
है। यद्यपि समस्त सृष्टि ईश्वरांश है तो भी किसी वि
में यह ईश्वर तत्त्व परिणाम में विशेष मात्रा में समावि
हो रहता है। यही कारण है कि जिससे सभी में
तत्व व मनस्तत्व एक-सा नहीं रहता। इसलिए भिन्न भि
मनोवृत्तियाँ, तरह तरह के विचार संसार में दृष्टिगो
होते हैं। हो सकता है, बालक श्रीनिवास के अबोध मन
गुरुवर्य का संदेश संतोष का कारण बना हो। माता-पि
के मन में संतोष और चिंता के सम्मिलित मनोभावों
कारण अवश्य ही बना होगा। अपनी प्रिय संतान
ईश्वरार्पण करते हुए मानसिक उथल-पुथल न हो–ऐसे माँ-
संसार में कितने होंगे? इधर गुरुवर्य का संदेश, उधर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बाप के मन में मिश्रित-भावों का संघर्ष और बालक श्रीनिवास के मन में जगद्गुरु और महान् तपस्वी के आह्वान का हर्ष, माता-पिता से विछोह का, सो भी अल्पकाल के लिए नहीं, सदा के लिए, दुःख दोनों भावनाओं का मानसिक कश्मकश। छोटा बच्चा जिसका मन खेलकूद में लगा होगा, वह क्या निर्णय कर पा सकेगा। खेलकूद और माँ-बाप का प्रेम इतना ही तो बच्चे को चाहिए। आम तौर पर इस छोटी उम्र के बच्चों के मन में भाव-संघर्ष को समझने और भविष्य के निर्णय करने की सूझ-बूझ कैसे हो सकेगी। परंतु;

बालक श्रीनिवास ऐसे बालकों में न था। उनका, जन्म से ही ऐसा स्वभाव बना था कि वह हमेशा एकांत जीवन को पसंद करता, पिता के पूजा-पाठ आदि अनुष्ठानों पर एकाग्र दृष्टि होती। इनके खेल भी निराले होते; परंपरागत भगवद्भक्ति, धर्म-श्रद्धा, कर्म निष्ठा, न्याय-परायणता आदि गुण बीज रूप में सुप्त थे। जगद्गुरु के आह्वान ने इन सोई पड़ी शक्तियों को जगा दिया। सांसारिक सुख-भोग की अपेक्षा पारलौकिक आनंद बहुत बड़ा है, अतः उस महान् आनंद को प्राप्त करने की ओर मानसिक-वृत्तियों को लगाना और इस असाध्य को साधना द्वारा पाना – ये और ऐसे ही विचार इस बालक के हृदय में तरंगित होते रहे होंगे। इस तरह के कोमल विचारांकुर को सिंचित कर एक विशाल वृक्ष के रूप में विकसित करने के लिए श्री श्री जगद्गुरु चंद्रशेखर भारती स्वामी से बढ़कर चतुर माली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और कौन हो सकते हैं ? स्वयं गुरुवर्य ने इस बालक में तादात्म्य भाव से विकासोन्मुख बीजांकुर को देखा, परखा। इसी कारण से गुरुवर्य का वरद हस्त उन की रक्षा में सदा तत्पर रहा करता था।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

११

श्रीनिवास का जन्म ता. १३ नवंबर १९१६ में और संन्यास दीक्षा ता. २२ मई १९३९ में, अर्थात् चौदहवीं आयु में संन्यास ग्रहण। तेरहवीं आयु में आचार्यपाद श्री चंद्रशेखर भारती के आदेशानुसार श्री शारदा माँ के सान्निध्य में उपनयन संस्कार हुआ। खेलकूद में व्यस्त रहने की उम्र में उपनीत वटु। उपनयन संस्कार द्वारा संस्कृत होनें के पश्चात् तत्संबंधी अनुष्ठान आदि। दिनचर्या में भारी परिवर्तन। सुबह से शाम तक कोई न कोई अनुष्ठान लगा ही रहता।

स्वभाव से शांत एवं चिंतनशील बाल-ब्रह्मचारी का मन थोड़े ही समय में इन अनुष्ठानों में रमने लगा। केवल रमने ही नहीं लगा बल्कि सतत अनुष्ठान-रत ही बन गया। यह अनुष्ठान आजीवन-व्रत ही हो गया। अनुष्ठान से छुट्टी मिली कि नहीं अध्ययन शुरु होता। अध्ययन की समाप्ति के बाद अनुष्ठान का समय होता। ऐसी स्थिति में अन्यान्य बातों तुरन्त के लिए समय कहाँ? निर्दिष्ट समय पर उक्त अनुष्ठान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनिवार्य कर्तव्य है। यों इस बाल-ब्रह्मचारी का जीवन भावी उत्तरदायित्व के लिए उपयुक्त रीति से गढ़ता गया। मनो वाक्कायकर्म से संन्यास लेने के योग्य सिद्ध हुआ। उचित समय पाकर, उम्र कम होने पर भी ब्रह्मचारी श्रीनिवास को संन्यास में प्रविष्ट कराया गया।

इस तुरीय आश्रम में प्रविष्ट होने के लिए अनेक कर्म विधिवत् करने पड़ते हैं। इन सारे विध्युक्त क्रिया कलापों के द्वारा संन्यास में दीक्षित होने पर उन्हें संन्यासाश्रम के विधानानुसार आश्रम धर्म-कर्म का अनुष्ठान करना होता है। ब्रह्मचर्याश्रम के अनुष्ठानों से छुट्टी मिली तो संन्यासाश्रम के अनुष्ठान आरंभ हो जाते हैं। इन अनुष्ठानों में दीक्षागुरु का मार्ग-दर्शन होता रहता है।

इन बाल-ब्रह्मचारी श्रीनिवास को दीक्षा देनेंवाले स्वयं व्याख्यान सिंहासनाधीश्वर श्री श्री चंद्रशेखर भारती पूज्य पाद थे। संन्यस्त होने पर श्रीनिवास का पुनर्जन्म हुआ। वे गुरुवर्य श्री श्री चंद्रशेखर भारती महास्वामी के करकमल संजात हुए और श्री श्री विद्यातीर्थ के नाम से अभिहित हुए। अब श्री श्री गुरुवर्य विद्यातीर्थ पूज्यपाद जगद्गुरु श्री श्री चंद्रशेखर भारती महास्वामी द्वारा इस दक्षिणाम्नाय शारदा पीठ के व्याख्यान सिंहासनाधीश्वर बननें के लिए उपयुक्त सभी बातों में शिक्षित होने लगे। इस तरह भावी उत्तराधिकारी के रूप में गढ़ने, पल्लवित करने का कार्य गुरुवर्य चंद्रशेखर भारती महास्वामी ने किया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रृंगेरी का यह शारदा पीठ व्याख्यान सिंहासन कहलाता है। आद्य आचार्य शंकर ने भारत की चारों दिशाओं में धर्म-साम्राज्य स्थापित कर वैदिक धर्म की प्रतिष्ठा करने के लिए चार आम्नाय पीठों की स्थापना की। इन में श्रृंगेरी का यह शारदा पीठ प्रथम और मूल आम्नाय पीठ है। यह निर्विवाद रूप से निर्णीत ऐतिहासिक सत्य है। पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण के चारों दिशाओं के ये आम्नाय पीठ विधिवत् क्रमशः जगन्नाथ (पुरी), द्वारिका, बदरी और श्रृंगेरी में स्थापित समसामयिक पीठ हैं। इन चारों पीठों में आद्य आचार्य की अटूट परंपरा चलती आ रही हैं। ये चारों धाम वैदिक धर्म के चार प्रकाश स्तंभ हैं। इन प्रकाश स्तंभों से निकलनेवाला प्रकाश संपूर्ण भारत पर फैला हुआ है। इन आम्नायों के प्रकाश के कारण वैदिक धर्म अचल और अटल है। अवैदिक धर्मों के या मतों के बावजूद हिमालय-सा खड़ा है, अजेय है।

इन आम्नाय पीठों में प्रतिष्ठित आचार्य आद्य गुरु शंकर के चार प्रमुख शिष्य हैं। ये चारों आम्नायानुष्ठान निष्ठ हैं जिनकी अक्षुण्ण परंपरा आज तक चलती आयी है। ये चार आम्नाय पीठ चारों वेदों के प्रतीक हैं। ये चार दृष्टि गोचर आम्नाय हैं। शेष तीन – ऊर्ध्वाम्नाय, आत्माम्नाय, निष्कल – केवल ज्ञान गोचर हैं न कि दृष्टि गोचर। अतः ये तीनों ज्ञानाम्नाय महाज्ञानी की स्वानुभूति के विषय हैं। यहाँ आम्नाय शब्द की व्याख्या अस्थानीय नहीं होगी। आम तौर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर नित्य-ब्रह्मयज्ञ करनेंवाले ब्राह्मण एवं न करनेंवाले ब्राह्मण श्रावणी के दिन ब्रह्म-यज्ञ (देव ऋषि पितृ तर्पण) के अवसर पर – "समाम्नायः समाम्नातः" कहते हैं। संभवतः इस शब्द का अर्थ इस अनुष्ठान के करानेवाले पुरोहित ही नहीं समझते होंगे। मंत्र-द्रष्टा ऋषि-मुनियों ने स्वानुभूति से लगातार साधना द्वारा जिस सिद्धि का दर्शन प्राप्त किया और उस सिद्धि के साधन-मार्ग का उपदेश अपने सत्पात्र शिष्यों को दिया, एवं उस मार्ग की एक परंपरा कायम की, तथा उस साधना का अभ्यास कराकर अपने उन शिष्यों को आदेश दिया कि इस साधना मार्ग की परंपरा को कायम रखो; इसे कायम रखने के लिए कुछ नियम, शास्त्र विधि के अनुसार बनाये। इन्हीं नियमों का अनुसरण कर साधना का अभ्यास करने को आम्नाय कहते हैं। संस्कृत का धातु "म्ना" है, यह "भ्वादि" गण का है जिसका अर्थ "म्नायते – अभ्यस्यते" है। "आ" उपसर्ग हैं जिसके साथ मिलाने पर "आम्नाय" बनता है। इसका अर्थ हुआ "आम्नायते – आमनति धर्माधर्मौ उपदिशति"। इस से स्पष्ट है आम्नाय पीठ का काम धर्माधर्मों का विवेचन कर लोक को धर्म-सूक्ष्म समझाना तथा व्यावहारिक जीवन में सत्य धर्म की प्रतिष्ठा कर लोक हित साधना के मार्ग को प्रशस्त करना। इस तरह से परंपरागत सनातन धर्म-संप्रदाय का उपदेश द्वारा सर्वत्र प्रतिष्ठित करने का गुरुतर कार्य भार इन आम्नाय पीठों पर स्थित है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौदह वर्षीय किशोर के कंधों पर इतना बड़ा भारी बोझ ता. २२ मई १९३१ को पड़ा। इस भारी कर्तव्य का निर्वहण आसान नहीं। इस के लिए बहुत बड़ी तैयारी करनी पड़ती है। संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् इस परंपरागत आम्नाय की साधना विध्युक्त रीति से करनी होती है और पीठस्थ होने के लिए आवश्यक, विधि-विधानों का निर्वहण करने के लिए, अध्ययन-अध्यापन करना कराना भी पड़ता है। उस अपार ज्ञान - सागर में डुबकी लगाकर ज्ञान-रत्न की खोज करनी पड़ती है।

सद्‌गुरु स्वामी श्री चंद्रशेखर भारती महाराज इस किशोर संन्यासी को आजीवन गढ़ते रहे। तब. जा कर श्री श्री अभिनव विद्यातीर्थ महराज उस सागरोपम ज्ञान प्रकाश में संयुक्त होने योग्य बने। धीरे-धीरे किशोर संन्यासी युवा हुए।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१२

जन्म, सन् सत्तावन के गदर के ठीक साठ (६०) साल बाद सन् १९१७ में हुआ। सन् १९२४–२५ के आसपास उपनीत हुए जब कि बार्डोली सत्याग्रह नें राष्ट्रीय रूप धारण किया था। सन् १९३०–३१ में जब कि राष्ट्रव्यापी नमक सत्याग्रह ने लोक-मानस को प्रभावित किया था तब कुमार श्रीनिवास नें संन्यास ग्रहण किया था। क्या इन राष्ट्रीय आंदोलनों का असर इस चौदह वर्षीय संन्यासी के मन पर नहीं पड़ा था? अवश्य ही पड़ा है। समवयस्क साथी देशव्यापी इस आंदोलन में जब क्रियाशील रहे तब यह आम्नाय पीठ के अनुष्ठानों में कैसे मन लगा सकेंगे? संन्यासी होकर सांसारिकता के प्रति उदासीन रहना, एवं चढ़ती जवानी में अपने सम-सामयिक समवयस्कों को इस राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय देख कर छटपटानेवाले दिल ले कर एकांत चिंतन-अध्ययन और ध्यान-मनन में रत रहना संभव कैसे हो सकता है?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक पराधीन देश को स्वाधीन बनने की महत्वाकांक्षा इस युवा संन्यासी के मन में नहीं था ? राष्ट्र को स्वतंत्र बनाने की महत्वाकांक्षा रही अवश्य। आदि शंकर ने एक संस्कृति की नींव पर स्थित भारत का समग्र दर्शन किया था। उसी आर्षेय सांस्कृतिक-सूत्र से आबद्ध भारतीयता को वैदिक-धर्म की सुदृढ नींव पर पल्लवित करने के उद्देश्य से इस देश के चारों सीमा प्रदेशों में चार आम्नाय पीठों की स्थापना जो की, वह क्या यों ही था ? इन चार आम्नाय पीठों के द्वारा समग्र भारत को एक इकाई के रूप में परिणत कर धर्म समन्वित विधान द्वारा एक आदर्श साम्राज्य का निर्माण करना क्या कर्तव्य नहीं ? क्या यह आदर्श कम महत्व पूर्ण है ?

राष्ट्रीय आंदोलन राजनैतिक है। इस आंदोलन के कारण शासकीय दृष्टि से राष्ट्र पारतंत्र्य से मुक्त होगा तो उसे अपनी परंपरागत संस्कृति के अनुरूप रूपित करना सामयिकता की दृष्टि से अनिवार्य नहीं ? क्या यह कार्य कम महत्वपूर्ण है ? – ये और ऐसे विचार यौवन की दहलीज पर स्थित इस युवा संन्यासी आचार्य को अभिभूत किये बिना न रह सके।

श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ ने हाथ कते सूत के बने मोटे खद्दर को काषाय में रंगकर पहनना शुरू किया। जो भी दर्शनार्थी आते उन्हें राष्ट्र-हित के कार्यों में प्रवृत्त होने की प्रेरणा देते। एक स्वतंत्र राष्ट्र, एक राष्ट्र-धर्म, एक राज्य सत्ता की आवश्यकता – इन बातों पर सदा चिंतन करते,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और बड़े उत्साह के साथ इन विचारों को समझाते भी

विभिन्न भाषाओं में फैले हुए भारतीयों में भा भिन्नता के कारण भावैक्य, विचार विनिमय के बिना ए भारतीयता की भावना का विकास करना असाध्य है आदि शंकर के समय में भी स्थिति ऐसी ही थी; उन्हों संस्कृत को माध्यम बना कर अपने महान कार्य को संप किया था। पर आज भाषा गत भिन्नता के कारण इ सांस्कृतिक इकाई के टुकड़े टुकड़े हो कर भाषाक्षेत्रों बँट गया है। इन टुकड़ों को एक सूत्रों में पिरोने लिए, क्षेत्रीय भाषाओं का विकास करते हुए एक माध्यम की आवश्यकता है। इस के लिए हिन्दी उपयुक्त भाषा है। इस भाषा के द्वारा विभिन्न भाषा-भाषी जनता को एक सांस्कृतिक सूत्र में बाँधा जा सकता है। अतः इन भाषाई इकाइयों के बीच संपर्क स्थापित करने तथा विचार विनिमय के द्वारा समस्त भारत वासियों को एक सूत्र में पिरोने के माध्यम के रूप में हिन्दी की ताईद करते आचार्य स्वयं हिन्दी में निष्णात बने। इतना ही नहीं श्रृंगेरी के शंकर मठीय सद्विद्या पाठशाला में छात्रों को प्रोत्साहन दे कर हिन्दी सीखने को प्रेरित भी करते। इस तरह खादी और हिन्दी – इन दोनों राष्ट्रीय रचनात्मक कार्यों में आचार्यपाद सक्रिय सहयोग देते रहे। आज भी दे रहे हैं।

राजनैतिक दृष्टि से राष्ट्र स्वतंत्र अवश्य होगा, परन्तु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने हाथ में सत्ता के आने पर भौतिक दृष्टि से उस सत्ता का संचालन होगा। इससे एक स्वतंत्र राष्ट्र की आत्मा का विकास नहीं हो सकेगा। राष्ट्र की आत्मा को रचनात्मक कार्य करते हुए, प्रबुद्ध करना आवश्यक है। इस महान् राष्ट्रीय कार्य को सांस्कृतिक भित्ती पर प्रतिष्ठित किया था आदि शंकर ने। उस महान् आचार्य ने इस राष्ट्रीय कार्य का भार अपने चार शिष्यों को सौंपा। चारों आम्नाय पीठ राष्ट्र की आत्म - चेतना के प्रहरी हैं। पीठाधिप राष्ट्रीय संन्यासी हैं।

अब युवा संन्यासी श्री श्रीमद्विद्यातीर्थ स्वामी इस व्याख्यान सिंहासन के उत्तराधिकारी भी धीरे धीरे बन रहे थे। अपने उत्तराधिकार से संबंधित कार्यों के निर्वहण की तैयारी के साथ साथ इस व्याख्यान सिंहासन के लिए निर्दिष्ट क्षेत्र के अंतर्गत प्रजा-जन को धर्म-राज्य के योग्य प्रजा बनाने के लिए उपयुक्त शिक्षा देना; सिंहासनाधिकार क्षेत्र सीमांतर्गत अनेक धर्म केन्द्रों की व्यवस्था, संगठन और निर्वहण एवं इस कार्य के लिए आवश्यक आर्थिक व्यवस्था आदि समस्त कार्यों की ओर ध्यान देते हुए समय-समय पर इन केन्द्रों का निरीक्षण करना, आवश्यकतानुसार अन्यान्य वांछित प्रदेशों में ऐसे धर्म केन्द्रों की स्थापना तथा उनके संचालन की व्यवस्था आदि अनेक तरह की व्यावहारिक बातों में व्यस्त रहना भी पड़ता है। यह सारा कार्य सिंहासना-सीन होने के पश्चात् आचार्य वर्य के कर्तव्य हो जाते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वयं कर्तव्य रत होते हुए उपयुक्त व्यक्तियों को चुनकर निर्दिष्ट कार्य कराना, इस के लिए दिशा-दर्शन समय-समय पर देना भी एक आवश्यक कर्तव्य होता है।

तात्पर्य यह कि धर्म-पीठ के द्वारा सब तरह से नियंत्रण करना और विभिन्न कार्यों में नियुक्त व्यक्तियों को संभाले रहना कोई आसान काम नहीं। यह सिंहासन कोई फूलों की गद्दी नहीं, यह काँटों की गद्दी है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१३

अब इस युवा आचार्य श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ के सामने कर्तव्यों का ढेर जो लगा उन्हें तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं।

१) व्याख्यान सिंहासन से धर्म-तत्व का उपदेश देकर सिंहासनांतर्गत क्षेत्र-सीमा में रहनेवाली प्रजा को धर्म परायण बनाने के साथ-साथ कर्मनिष्ठ एवं कर्तव्य निष्ठ बनाना;

२) आत्म चिंतन अध्ययन-अध्यापन आदि के द्वारा ज्ञान प्राप्त करना, तथा स्वात्मोद्धार एवं प्रजाहित की साधना के लिए आवश्यक अनुष्ठान आदि करना कराना;

३) धर्म-कर्म एवं अनुष्ठान आदि में समयोचित एवं उपयुक्त मार्ग-दर्शन करने के लिए समय-समय पर केन्द्र में तथा केन्द्र द्वारा स्थापित उप केन्द्रों में भ्रमण करना।

इनके अलावा इन केन्द्रों के संचालन के लिए जरुरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्थ-व्यवस्था तथा व्यवस्थित अर्थ के सही विनियोग की ओ ध्यान देना भी आवश्यक कर्तव्य है। व्याख्यान सिंहासनांतर्ग क्षेत्रों में शिक्षण संस्थाओं को स्थापित करना। इन स्थापि केन्द्रों व वहाँ की शिक्षण संस्थाओं के स्थिर-चर स्वत्वों क सुरक्षा-व्यवस्था आदि व्यावहारिक बातों पर गौर कर वगैरह इन्हीं पीठाधिप के कर्तव्य हैं। इन सब के अलाव काश्तकारी की भी व्यवस्था करनी पड़ती है।

इन कर्तव्यों के अलावा आश्रित शिष्य वर्ग के धर्म संदेहों को मिटाकर मार्गदर्शन करना पड़ता है। तीर्थ, मंदिर एवं क्षेत्रों में हो रहे अनुष्ठानों का निरीक्षण, व्यवस्था आदि में आचार्य का मार्गदर्शन वाँछनीय होता है। अतः आचार्य श्री को इस कार्य के लिए भ्रमण करना पड़ता है। इस भ्रमण में आम जनता के साथ, गुरुवर्य को, संपर्क रखना होता है। यह भी आवश्यक है आम जनता गुरुवर्य से संपर्क रखें। इस से जनता को सामाजिक धर्मानुकूल व्यवस्था में दिशादर्शन तथा प्रोत्साहन प्राप्त होता है।

यों इस युवा आचार्य श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ के सामने 1) आध्यात्मिक, 2) व्यवस्थात्मक, 3) संगठनात्मक, 4) देश की जनता को दिशा दर्शन देकर राष्ट्र की आत्मचेतना को प्रबुद्ध कर उन्नत-स्तर पर उठाने के लिए करणीय कार्यों की योजना तथा इस योजना का कार्यान्वयन – इस तरह के अनेक उत्तरदायित्वों का ढेर लग गया। जनता का सहयोग प्राप्त कर इन कार्यों का निर्वहण करना है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस गुरुतर कार्यभार को निभाने का उत्तरदायित्व इस युवा संन्यासी श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ स्वामी जी के कंधों पर धीरे-धीरे पड़ने लगा। पूज्य गुरुवर्य श्री श्री चंद्रशेखर भारती समय-समय पर दिशादर्शन देते हुए श्री श्री अभिनव विद्यातीर्थ स्वामी को संभालनें सँवारते रहे।

राष्ट्रव्यापी राजकीय आंदोलन शासकीय दृष्टि से राष्ट्र को स्वतंत्र बनानें के ध्येय से ज़ोरों से चल रहा था। पूज्य गुरुवर्य श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ पूज्यपाद के सामने एक और कर्तव्य उठ खड़ा हुआ। राजकीय दृष्टि से स्वतंत्र होने पर उस स्वतंत्र राष्ट्र की प्रजा को अपनी संस्कृति के अनुकूल बनाना और रचनात्मक दृष्टि से भावैक्य स्थापित कर राष्ट्र का पुनर्निर्माण करना भी एक आवश्यक कार्य है और यह कार्य सामयिक आवश्यकता की दृष्टि से बड़ा महत्व पूर्ण है। भविष्यद्रष्टा तपस्वी आचार्य को इस सामयिक आवश्यकता की भी पूर्ति करनी थी। पूज्य गुरुवर्य श्री श्री चन्द्रशेखर भारती महास्वामी ने इस सर्वग्रासी दृष्टि से अपने शिष्य प्रवर स्वामी अभिनव विद्यातीर्थ को तैयार किया ही था। महासन्निधान श्रीमच्चन्द्रशेखर भारती अधिकाधिक अंतर्मुखी होने लगे तो धीरे-धीरे सन्निधान श्रीमद्विद्यातीर्थ गुरुवर्य को सारी जिम्मेदारियों का भार संभालना पड़ा। इस अवस्था में सन् १९५४ सितंबर ता. २४ को महासन्नि-धान श्री चन्द्रशेखर भारती स्वामी जी का कलेबर रह गया और आत्म-ज्योति महा-ज्योति में संयुक्त हो गयी। अब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तक अर्थात् सन् १९३१ से सन् १९५४ तक दो महान् तप-स्त्रियों ने शारदा-पीठ से ज्ञान-ज्योति फैला कर धर्म-साम्राज्य को द्योतित किया था।

❋

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१४

अब तक दक्षिणाम्नाय शारदा-पीठ के दो महान् तपस्वियों के द्वारा शिष्यवृंद को ज्ञान प्रकाश मिलता रहा। सन् १९५४ सितंबर ता. २४ के बाद दो तपः पुंजों के स्थान में एक रह गया। एक के अभाव से चिंताकुल शिष्यवृंद की स्थिति को श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ गुरुवर्य ने पूर्ववत् शीघ्र ही दक्षता के साथ संभाल कर उस रिक्तता का अनुभव होने न दिया।

सन् १९५४ अक्तूबर ता. १६ के दिन श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ महाराज व्याख्यान सिंहासन पर विधिवत् अभिषिक्त हुए। इस पट्टाभिषेक समारंभ के पश्चात् आचार्य वर्य ने केन्द्रीय व्यवस्था को ठीक कर उप केन्द्रों एवं शिष्यानुग्रह आदि आदि अन्य कार्यों की ओर ध्यान देने लगे। इस काम के लिए एक बार समूचे धर्माधिकार क्षेत्र का परि-भ्रमण करना जरूरी था। दक्षिणाम्नाय क्षेत्र के अंतर्गत प्रदेशों के निवासी शिष्य वृंद के साथ संपर्क करना, तद्वार उनकी सामाजिक व धार्मिक समस्याओं को समझना और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन समस्याओं को सुलझा कर उपयुक्त मार्गदर्शन देना - ये और ऐसे अन्य कार्य सामयिक अवश्यकताओं में प्रमुख रहे। इस काम के लिए उपयुक्त कार्य-क्रम बना कर तुंगामूल की यात्रा से श्रीगणेश कर भ्रमण कार्य आगे बढ़ाया।

यहाँ इस परिभ्रमण के बारे में कुछ प्रकाश डालना अस्थनीय नहीं होगा।

गुरुवर्य श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ को, भक्तवृंद आदि आचार्य शंकर का अवतार मानते हैं। उनकी यह मान्यता निराधार नहीं। श्री आचार्य शंकर ने अल्प वय में यातायात के साधनों के अभाव के उन दिनों में आसेतु हिमाचल पर्यन्त भ्रमण कर, उस समय की धार्मिक स्थिति का अध्ययन किया। आर्षेय वैदिक धर्म में घुसी शिथिलता को देखा परखा। क्षुद्र धर्म-मतों के कारण जो अवैदिक आचरण सामाजिक जीवन में घुस बैठे थे और इन के कारण जो अवैदिकता फैली थी उसका निवारण कर आर्षेय वैदिक धर्म की प्रतिष्ठा की थी।

आज की स्थिति भिन्न है। आज के सामाजिक जीवन में धीरे-धीरे धर्म-निरपेक्षता के भाव प्रबल होते जा रहे हैं। धार्मिक मान्यताएँ शिथिल हो रही हैं। इस वैज्ञानिक युग की युग चेतना ने धार्मिक विश्वासों की जड़ हिला दी है। इस युग चेतना के साथ आर्षेय वैदिक धर्म का समन्वय सामयिक अवश्यकता है। अर्थात् ज्ञान को विज्ञान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के साथ समझौता करना होगा। विज्ञान यदि भौतिक समृद्धि का मूल है तो ज्ञान अध्यात्म संपत्ति का मूल है। अध्यात्म तत्व से शून्य भौतिकता संसार में अशांति फैलाती है। इस से संघर्ष का जन्म होता है। संघर्ष-मुक्त सौहार्द्र-पूर्ण सह जीवन की प्रतिष्ठा करने के लिए धर्म की नींव पर आत्म चेतना को प्रबुद्ध करना जरूरी है। इसी सामयिक आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए धर्म गुरु श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ ने भ्रमण का कार्य-क्रम बनाया।

आचार्य वर्य का यह भ्रमण करीब साढ़े छः वर्ष तक होता रहा। इस लंबी अवधि के भ्रमण में श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ गुरुवर नें आद्य आचार्य शंकर के उस महान् कार्य का सिंहावलोकन किया और सामयिक आवश्यकताओं की दृष्टि से प्रजाजन को मार्ग-दर्शन दे कर सन्मार्ग में प्रवृत्त होने की प्रेरणा दी। आचार्य वर्य के उपदेशों से प्रेरित जनता उनके दर्शाये हुए धर्म-मार्ग पर चल कर अपने को कृतार्थ मान रही है।

आचार्य वर्य के इस भ्रमण कार्य ने देश में एक अभूत पूर्व धार्मिक जागृति पैदा की। इस तरह आदि शंकर के महान् कार्य को आचार्य श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ गुरुवर्य ने पुनरुज्जीवित किया। सामाजिक जीवन में जो मनमानी स्थिति पैदा हुई थी उसका निवारण कर सौहार्द्र पूर्ण सहयोग द्वारा सह-अस्तित्व एवं सहजीवन के आदर्श को सामाजिक जीवन में प्रतिष्ठित किया। नास्तिकता की जगह आस्ति-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कता उत्पन्न कर धर्म-संयुक्त समाज-जीवन का मार्ग प्रश
किया। आचार्य के इस लंबे भ्रमण में ऐसी बहुत-सी घटना
घटी है जिनका उल्लेख विस्तार भय से यहाँ नहीं किया
रहा है। परन्तु एक ऐसी घटना का उल्लेख करना स्थाल
पुलाक न्याय से आवश्यक प्रतीत होता है, जिस के विषय
एक प्रत्यक्ष दर्शी ने कहा था।

आचार्य वर्य अपने भ्रमण के सिलसिले में नेपा
पहुंचे। उन दिनों वे वहाँ के राजा के अतिथि रहे।
दिनों श्री श्रीमन्नारायण जी अग्रवाल भारतीय प्रतिनिधि
हैसियत से वहाँ कार्यरत थे। जब आचार्य वहाँ पधारे तब नेपा
की स्थिति राजकीय व सामाजिक दृष्टि से बड़ी विषम
गयी थी। इन पंक्तियों के लेखक ने श्री श्रीमन्नारायण
से तब मुलाकात की जब वे बेंगलूर आये थे। बातचीत
सिलसिले में बात उठी नेपाल की। तब उन्होंने कहा "श्री
आचार्य बहुत ही माकूल मौके पर पधारें, जब कि वहाँ
तरह की विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गयी थीं। आचा
की उपस्थिति के कारण परिस्थिति बहुत कुछ सुधर ग
और साथ-साथ बहुत ही अनुकूल वातावरण का सृजन हुआ
व्यवस्था के कार्यों में काफी सुगमता आ गयी। वहाँ के सा
जनिक जीवन में एक अभूत पूर्व धार्मिक जागृति पैदा
गयी।" यह गुरुवर्य की तपःपूत वाणी का प्रभाव है
क्यों न हो, निःस्वार्थ भाव से विश्वमानवता के हित साध
की दृष्टि से तपस्या करनेवाले ईश्वरावतारी महानुभाव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तपश्शक्ति का प्रभाव जनता पर क्यों न पड़ेगा ?

महराज रोमपाद के राज्य में भयंकर अकाल पड़ गया था और पीने के लिए पानी तक की कमी पड़ गयी तो राजा बहुत चिंतित हो गये। उस समय कई महात्माओं ने उन्हें सलाह दी कि वे किसी तरह मना-मुनू कर ऋष्यश्रृंग महर्षि को जो कि कहीं आस-पास तपस्या कर रहे हैं बुलवा लिया जाय तो राज्य में पानी बरसेगा और सुभिक्षा होगी। महराज रोमपाद ने उस महर्षि को बुलवाने के लिए सारी व्यवस्था कर मंत्रियों के साथ लोगों को भेजा। बहुत परिश्रम से मना-मुनू कर लोग महर्षि को अपने राज्य में ले आये। राज्य की सीमा में महर्षि का प्रवेश होते ही वातावरण बदल गया। खूब वर्षा हुई और दुर्भिक्षा की अवस्था मिटी, राज्य संपन्न व समृद्ध हुआ। यह पौराणिक गाथा आज़ भी तुंगा-तीर के इन तपस्वियों के विषय में सत्य है। श्री श्री स्वामी अभिनव विद्यातीर्थ जी अपने भ्रमण के सिलसिले में जब तमिलनाड़ में भ्रमण कर रहे थे तो वहाँ के किसी स्थान में लोग पानी के अभाव के कारण बहुत कष्ट पा रहे थे। कई वर्षों से वहाँ पानी बरसा न था। श्री श्री स्वामी जी वहाँ पधारे। उनका पदार्पण होना था कि उसी समय वर्षा आरंभ हो गयी, खूब बरसा; लोग बहुत खुश हो कर "मळैस्वामी" (बारिश का देव) का नाम देकर श्री श्री विद्यातीर्थ महाराज को नये अभिधान से विभूषित कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आनंद से नाच उठे। यह एक वास्तविक घटना है जि
कई लोगों ने सुनाया। कहने का तात्पर्य यह कि इ
तुंगा-तीर के तपस्वियों का प्रभाव महर्षि ऋष्यश्रृंग के सम
से आज तक निर्बाध-गति से अक्षुण्ण बना हुआ है। इस
स्पष्ट है कि इस पीठ की गुरु परंपरा की तपस्या, साधन
एवं अनुष्ठान "लोकहिताय" होता रहा है। लोकहि
साधन के ही लिए जिनका जीवन धरोहर है जिनका संकल
"सर्वेषां अविरोधेन" और जिनके अनुष्ठान की समाप्ति
"लोकाः समस्ताः सुखिनो भवंतु" है, उन महापुरुष का तप
प्रभाव "लोक हिताय" नहीं तो और किस लिए होगा!
स्थाली-पुलक न्याय से इस घटना का ज़िक्र किया है।
और ऐसी घटनाएं श्री श्री पूज्यपाद अभिनव विद्यातीर्थ महराज
के व्यक्तित्व में भरी पड़ी हैं। ऐसी घटनाएं तो महान् तपस्वियों
के लिए साधारण-सी बातें होती हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

R65wN17
15266
❀ मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय ❀
वाराणसी।
आगत क्रमांक...... 1411 ....
दिनांक.................. 25/11/80......

१५

पूज्यपाद श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ महास्वामी जी की आकर्षक आकृति अपनी सौम्यता से आकर्षणीय ही नहीं, बल्कि तेजोवलय से आवृत्त मुखमंडल, त्रिपुड्रालंकृत भाल और गले में विराजमान रुद्राक्षमाला के कारण साक्षात् कैलासवासी सदा तपोनिरत शिव की साकार-कल्पना-मूर्ति-सी लगती है। एकाग्र-चित्त-भक्त के हृदय की यह कल्पित मूर्ति शरीर धारण कर सामने प्रत्यक्ष दर्शन देने आये स्वयं शिव जी हैं – ऐसा प्रतीत होता है। इस भव्य मूर्ति के सामनें उपस्थित भक्त भूख-प्यास भूल कर बिना पलक मारे भाव समाधि में मौन हो कर आत्म-विस्मृत हो जाता है। प्रभा-वलय के मध्य विराजमान तेजःपुन्ज में प्रेक्षक के अंतश्चक्षु विलीन हो जाते हैं और बाह्य नेत्र निर्निमेष हो दृश्यमान वस्तुजगत् के प्रति अंधे हो जाते हैं। हाँ, इस तरह की अनुभूति केवल वही कर पा सकता है जो एकाग्र चित्त हो और तदेक ध्यान निरत हो। यह स्थिति इस शरीरधारी स्वयं प्रकाश के सामने अपने आप हो जाती है। श्री श्री पूज्यपाद की गंभीरवाणी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रोता के मन में भय मिश्रित हर्षोत्कंपन पैदा कर देती है। व्यक्ति गद्‌गद हो कर इस भव्य तेज के सामने निर्विकार हो जाता है।

यह महनीयता तुंगातीर के तपस्वियों के परंपरागत अनुष्ठान के कारण प्राप्त उपलब्धि है। इस उपलब्ध की अक्षुण्ण धारा सतत प्रवहित तुंगा की धारा के समान प्रवहित हो आम्नाय का उपबृंहण कर जीव राशि के कल्याण में अपने को कृत-कार्य समझती है। इस तपस्या की यह सहज परिणति है।

आचार्यपाद विद्यातीर्थ मुमुक्षु नहीं, मुक्त जीव हैं। एक मुक्त जीवी को व्यावहारिक जगत् से क्या नाता? जीवन के चरमावधि लक्ष्य की प्राप्ति के पश्चात् शेष क्या रह जाता है? ऐसे पहुँचे हुए महान् आत्मा को जगत् के व्यवहार की जरूरत ही क्या? परन्तु, लोक-कल्याण की दृष्टि से मुक्त जीव को भी व्यवहार में लगना पड़ता है। स्वयं आचार्य को काश्त कराते देखा जा सकता है। पूछने पर बताते हैं कि "दर्शनार्थियों को मुट्ठी भर प्रसाद बाँट सकने की शक्ति रखनी हो तो यह कृषि-कर्म कराना आवश्यक है। काश्तकारी भी तो तपस्या का अंग है।" देखिये तो इस तपस्वी की यह कैसी मनोवृत्ति है। अपने पूजा-पाठ के लिए आवश्यक पत्र-पुष्प तक स्वयं अपनी निगरानी में पैदा कराते हैं। यद्यपि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसे छोटे-मोटे काम करने के लिए अनेक नौकर-चाकर हैं तथा परिचर्या के लिए अनेक व्यक्ति हैं तो भी आचार्य-पाद इन बातों में स्वावलंबी हैं। अपने काम आप करने में जिस आत्मतोष का अनुभव होगा वह अन्य व्यक्तियों के द्वारा कराने से थोड़े ही मिलेगा ? स्वावलंबन का यह आदर्श अनुकरणीय है।

मुक्त जीवी के लिए किसी अनुष्ठान की क्या जरूरत ? फिर भी आचार्यपाद अनुष्ठान रत रहते हैं। क्यों ? क्योंकि व्यावहारिक जीवों के लिए मार्ग दर्शाने तथा लोक कल्याण की दृष्टि से आचार्यपाद अनुष्ठान में रत रहा करते हैं। सारा अनुष्ठान आचर्यपाद की मौन-तपस्या की व्याख्या है। अव्यक्त की विवृति है।

मझोले कद की गौरांग मूर्ति व्याख्यान सिंहासन पर साल में एक बार दशहरे के दिनों में विराजते हैं। यह सिंहासन श्री शारदा देवी के मंदिर में ठीक शारदा के सामने २५-३० गज दूरी पर रखा होता है। आचार्यपाद ठीक सामने व्याख्यान-पीठ पर आसीन होते हैं। यह दृश्य बड़ा ही भव्य होता है। ऐसा लगता है कि मंडनमिश्र के यहाँ वाक्यार्थ करते समय वाक्यार्थ करने के लिए बैठी उभय भारती श्री शारदा जी के सामने शास्त्र चर्चा के लिए स्वयं आदि शंकर ही मानो विराजमान हैं। इस दृश्य को देखते ही बनता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री चरणों के तत्वावधान में संपन्न होनेवाले याग, यज्ञ आदि अनुष्ठानों के बीच श्रीचरणों का दर्शन होता है। ऐसे मौके पर स्वामी जी की भव्यमूर्ति स्वर्गीय आभा से पूर्ण कैलास शिखर पर तपोलीन शिव जी ही उतर आये हों – ऐसा लगता है। जटा-जूट रहित रुद्र त्रिपुन्ड्र भूषित भाल, कषाय वस्त्रावेष्टित वक्ष पर शोभित रुद्राक्ष माला, दंड शोभित हस्त देखने से अभी अभी समाधि से जागृत, अनुष्ठान से संतुष्ट, भक्त वृंद की भक्ति श्रद्धा से प्रसन्न हो कर समाधि भूमि से उतर कर आ रहे पिनाक-पाणि ही लगते हैं। अभीष्ट पूरा करनेवाले उस हँसमुख मूर्ति के समक्ष श्रद्धावनत भक्त निर्निमेष हो थोड़ी देर आत्मविस्मृत-सा रह जाता है। भाव समाधि में ब्रह्मानंद का अनुभव करता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१६

ईश्वर स्वयं ईश्वर की पूजा करते हैं। क्यों ? महा प्रतिभाशाली महाकवि कालिदास तपोनिरत ईश्वर की उस उग्र तपस्या की बात को सुनकर चिंता में पड़ गये और सोचने लगे कि सारी संसृति के स्रष्टा और सर्वव्यापी भगवान् ईश्वर भी किस महान उपलब्धि के लिए ऐसे घोर तप में लगे हैं ? इस प्रश्न पर उस महाकवि की प्रतिभा बेकार सबित हुई। इस तप का कारण और इससे प्राप्त हो सकनेवाली सिद्धि-दोनों का बोध महाकवि को नहीं हो सका। अंत में सब तरह से हार कर लाचार हो लिख बैठा "केनापि कामेन तपश्चचार"। बेचार और क्या करता ? ईश्वर मानव रूप में निराकार ईश्वर के प्रतीक को सामने धर कर उसे चंद्र-मौली के नाम से अभिहित कर स्वयं चंद्रमौली ही पूजा करें ? यह सोचते समय प्रत्यक्षदर्शी के मन में वही शंका उठती है जो कालिदास के मन में उठी थी। प्रेक्षक अवाक् रह जाता है। ऐसा भान होने लगता है कि सामने चंद्रमौली ही बैठे हैं। आचार्य श्री का पारदर्शक मानव शरीर निरा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार शुद्ध स्फाटिक प्रतीक के समान दृष्टि गत होता है।
मंत्रमुग्ध की तरह प्रेक्षक निर्निमेष देखता ही रह जाता है।
उस तेजपुंज से निकली ज्योति-किरणों के प्रभावलय के प्रख
प्रकाश में वास्तविक जगत् विस्मृति की गहराई में विलो
हो जाता है। इस भव्यता में एक अलग ही संसार दृ
गोचर होने लगता है। इस भाव-समाधि से जागृत भव
पछताने लगता है कि और थोड़ी देर वही स्थिति रही हो
तो क्या अच्छा होता ?

आचार्यपाद का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए अतुर हो
कर अनेक लोग सैकड़ों की संख्या में चारों ओर यूथ बां
कर मंडराते रहते हैं। आम तौर पर आचार्यपाद तुंगा क
धारा के उस पार रहनेवाले नरसिंह वन में रहा करते हैं।
वहाँ नित्यानुष्ठान के योग्य स्थान चुन कर एक छोटे-से टी
पर आश्रम बनाया है। इस का नाम सच्चिदानंदविला
है। इसी में आचार्यपाद रहा करते हैं। आम तौर प
आचार्य श्री के सारे अनुष्ठान इसी सच्चिदानंदविलास
एकांत में होते हैं। अत्यन्त आवश्यक परिचर्या के लि
नियुक्त कुछ लोगों के सिवाय और किसी को इस
प्रवेश नहीं। इस सच्चिदानंदविलास की एक तरफ
पश्चिम की ओर कुछ हट कर एक प्रस्तर निर्मित विशाल
मंडप है। इस मंडप में चमकदार कृष्ण शिला - निर्मित
दो सुन्दर मंदिर हैं। इन मंदिरों में आचार्यपाद के गु
श्री चंद्रशेखर भारती और परमगुरु श्री सच्चिदानंद शिवाभि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नव नरसिंह भारती के संगमर्मर की दो मूर्तियाँ विराज रही हैं। दोनों मूर्तियाँ अत्यंत सजीव हैं। दर्शनार्थियों को स्वागत करनेवाली आँखे, हँसमुख मूर्तियाँ सजग हो कर संसार की गति-विधियों का निरीक्षण कर रहे प्रतीति होते हैं। इन्हीं गुरुवों के सान्निध्य में आचार्य श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ अध्यात्म-चिंतन में निरत रहते हैं।

सच्चिदानंदविलास के शांत एकांत में शायद आचार्यपाद अपने इन गुरु-परमगुरुओं के साथ मौन संभाषण करते होंगे। संभवतः लोक-कल्याण के विधि-विधानों पर विचार विनिमय भी होता होगा। यह भी हो सकता है कि 'ऋत' की साधना में लगे हो। क्यों कि 'ऋत' ही समस्त सृष्टि की उत्पत्ति का कारण है। विश्व में सुव्यवस्था, प्रतिष्ठा और नियमन का कारण भूत तत्व यहीं 'ऋत' है। इस 'ऋत' की सत्ता के कारण ही विषमता के स्थान पर समता, अशांति के स्थान पर शांति का साम्राज्य विराजमान है। यह 'ऋत' अविनाशी सत्य है। अर्थात् यही "सत्यभूत ब्रह्म" है। इसी का अवलंबन कर कार्य वर्ग अपनी स्थिति बनाये हुए हैं। यही कारण-सत्ता सर्वत्र अनुप्रविष्ट है। यह 'ऋत' आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक रूपों में परिलक्षित होती है। इस तरह तीन पृथक् पृथक् रूपों में दिखनेवाला यह ऋत-अर्थात् ब्रह्म एक है। इस गूढतम मौलिक तत्व का अनुसंधान आर्षचक्षु-संपन्न इस तुंगा तीर के तपस्वियों ने सदा से किया है और करते आ रहे हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसी 'ऋत' के अनुष्ठान में सच्चिदानंदविलास की इस अध्यात्म-प्रयोग शाला में श्री श्री आचार्य अभिनव विद्यातीर्थ पूज्यपाद निरत हो अनुसंधान करते रहते हैं।

यह सारा प्रयोग लीला मानुष वेषधारी ईश्वर किस लिए करते हैं? इस का कोई विशिष्ट उद्देश्य अवश्य होगा। ऋत-जात सहज सृष्टि में दृष्टिगत होनेवाली विकृति एवं इस विकृति के कारण उत्पन्न अधार्मिक प्रवृत्तियाँ और इन प्रवृत्तियों के कारण जन्य धर्म-निरपेक्ष सामाजिक मनमानी रीति-नीतियां आदि का निवारण कर, उस अविनाशी सत्य (ऋत) पर आधारित धर्म-पथ पर, लोकमानस का उन्नयन करने के लिए आचार्यपाद तरह-तरह के प्रयोग करते रहते होंगे। यह प्रयोग वस्तु जगत् से न हो कर तत्व से संबंध रखने के कारण साधारण व्यक्ति इस प्रयोग के निष्कर्ष को प्रत्यक्ष देख नहीं पाता।

आज करीब तीन दशाब्दियों से विदेशी शासन से राष्ट्र मुक्त है और राजकीय प्रयत्नों द्वारा स्वतंत्र-राष्ट्र के जीवन में राष्ट्र-धर्म की जागृति के प्रयत्न जिस प्रमाण में होने चाहिए उस प्रमाण में नहीं हो रहे हैं। धर्म-निरपेक्ष समाज निर्माण की कल्पना के कार्यान्वियन में शासकीय सत्ता विधि-विधान बना कर उसे कार्यान्वित कर चालू करती आ रही है। असल में शासकीय सत्ता का यह कार्यक्षेत्र नहीं, राष्ट्र को धर्म-व्यवस्था देने का कार्य धर्म-सिंहासन का है। यह कार्य जगद्गुरु का है। आचार्य-पीठ जो व्यवस्था दे वही राष्ट्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्म होगा। क्यों कि इस तरह के धर्म-दाता "सर्वं खलु इदं ब्रह्म" के आदर्श पर मानव समाज को मानवता-धर्म की नींव पर रचनात्मक दृष्टि से विधि-निषेध की ओर सत्ता-धारियों का ध्यान आकर्षित कर शासकीय सत्ता को सचालित करने के लिए शक्त होते हैं। भौतिक स्वातंत्र्य के बाद राष्ट्र में धार्मिक-सतर्कता का होना स्वतंत्र राष्ट्र के निर्माण के लिए आवश्यक भी है। कोई राष्ट्र, धर्म-निरपेक्ष नहीं रह सकता। प्रत्येक राष्ट्र किसी न किसी आदर्श को लेकर अपने को उसके अनुरूप रूपित करने में यत्नशील रहा करता है। यह आदर्श भौतिक और आध्यात्मिक दोनों तरह का हो सकता है। परन्तु केवल भौतिक अथवा केवल आध्यात्मिक दृष्टि से यत्त-शील होने से एक स्वस्थ राष्ट्र का उदय नहीं हो सकता है। इस के लिए अध्यात्म के साथ भौतिकता को समन्वित होना होगा। ज्ञान के साथ विज्ञान का यह समझौता है। इसी समझौते के आलोक पर वर्तमान वैज्ञानिक युग में लोकजीवन को रूपित करना होगा। इस सच्चिदानंदविलास की प्रयोग-शाला में ज्ञान-विज्ञान समन्वित जीवनोपयोगी व्यवहार्य-धर्म के स्वरूप का निर्माण एवं कार्यान्वित करने के तौर-तरीकों का साधन जुट रहा है। इस प्रयोगशाला के महान् विज्ञानी आचार्य, श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ स्वामी जी स्वयं हैं।

❋

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१७

करीब चौदह वर्ष की आयु में, नमक सत्याग्रह के राष्ट्र-व्यापी आंदोलन के दिनों में श्री श्रीनिवास जी ने संन्यास ग्रहण किया। आचार्यपाद श्रीमच्चन्द्रशेखर भारती गुरुवर्य ने इसी समय को संन्यास दीक्षा देने के लिए चुना था। श्री श्रीनिवास जी ने भी कृत-संकल्प हो कर संन्यास ग्रहण किया। आंदोलन के फल स्वरूप प्राप्त होनेवाली शासकीय स्वतंत्रता में प्राण प्रतिष्ठा करने के महान् कार्य को संपन्न करने के लिए एवं धर्मसंयुक्त स्वतंत्र भारत के निर्माण के लिए सन्नद्ध सेनानी बन कर अपने संपूर्ण जीवन को संन्यास ग्रहण कर धरोहर रख दिया। एक सांस्कृतिक सूत्र में आबद्ध भारत की एकता को कायम रखने और भटक जाने वाले लोगों को सही मार्ग पर चलाने तथा स्वतंत्र राष्ट्र की योग्य-प्रजा के रूप में रूपित करने के महान् कार्य को अनेक अनुष्ठानों के प्रयोगों द्वारा इस आदर्श की ओर लोक मानस का उन्नयन श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ करते आ रहे हैं। सच्चिदानंद-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विलास की अनुसंधानशाला में इसी 'ऋत' का अनुसंधान आज भी श्रीचरण संपन्न कर रहे हैं जिस से लोक जीवन में अशांति मिटकर शांति की स्थापना हो सके और विषमता के स्थान पर समानता की प्रतिष्ठा हो सके।

जिस उदात्त भावना की प्रेरणा से आदिशंकर ने चार आम्नाय पीठों की स्थापना की, वह केवल शिष्यार्जन कर आम्नाय-पीठ को धन-धान्य समृद्ध करने के लिए नहीं था, बल्कि परंपरागत संस्कृति की नींव पर सांस्कृतिक-भारत के निर्माण करने के महान् राष्ट्रीय कार्य को संपन्न करने के लिए था। उनके आदर्श की साधना भूमि केवल भारत की सीमाओं से आबद्ध नहीं सारा विश्व है। इसी लिए वह जगद्गुरु हैं। आदिशंकर राष्ट्रीय संन्यासी थे। उनके द्वारा स्थापित आम्नाय पीठों के सभी पीठाधिपति राष्ट्रीय संन्यासी हैं।

कहा जाता है कि आदिशंकर ने भगवान् वेदव्यास के दर्शन पाये थे और उनसे ब्रह्म-सूत्रों पर विचार-विनिमय किया था। ऐसी प्रतीति है कि उन दार्शनिक गुत्थियों को समझाने के लिए योग्य पात्र की प्रतीक्षा में व्यास जी समाधिस्थ हो कर प्रतीक्षा में बैठे थे। वर्तमान आचार्य श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ उस व्यास-मूर्ति के समक्ष पूजा करने के लिए अनेक आस्तिक महाजनों के सामने व्यास-पूर्णिमा के दिन अपने गुरु, परमगुरु चन्द्रशेखर भारती एवं नरसिंह भारती का अनुग्रह पा कर शारदा माई की अनुज्ञा लेकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बैठते हैं। पूजा का आरंभ होता है। प्रेक्षक वृंद एकाग्र भाव से पूजारत गुरुवर्य को देखते रहते हैं निर्निमेष। पता नहीं, कितनों को व्यास महर्षि के सामने वेदांत रहस्य की गुत्थियों को सुलझाते हुए "ब्रह्मजिज्ञासा" करते बैठे हुए आदिशंकर का उस समय दर्शन होता है! वेदघोष के बीच आचार्य की पूजा यंत्रवत् होती रहती है। आचार्य भाव-समाधि में बैठे लक्षित होते हैं। केवल हाथ पुष्प पात्र और आराध्य के बीच चलित रहता है। यह आत्म विस्मरण की स्थिति प्रेक्षक को भी होने लगती है।

तदेक चित्त प्रेक्षक ही इस महान् भव्यता का अनुभव कर सकता है। ऐसा अनुभव होने लगता कि है संसार में रहते हुए भी वह इस संसार से परे किसी अन्य आनंद लोक में विचरण कर रहा है। एक साथ अनेक कंठों से निकला सुमधुर वेदघोष अपूर्व वातावरण का सृजन करता है। पार्थिव शरीर लघु हो कर उस वातावरण में तैरता हुआ-सा लगता है। तपोभूमि स्वर्ग बन कर देवभूमि-सी प्रतीत होनें लगती है। आचार्य श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ श्रीचरण की तपस्या का प्रभाव कर्म-भूमि से बद्ध जीवी को एकदम कुछ क्षणों के लिए निर्विकल्प समाधि की स्थिति में बैठा देने में समर्थ है। क्यों न हो; विभांडक और ऋष्यश्रुंग की तपो-भूमि में प्रसवपीडाकुल, तप्त वालुका पर स्थित, मंडूक को फन-फैला कर छाया देनेवाले सर्प, आपस की शत्रुता को भूल कर प्रणिमात्र पर दयाभाव से प्रेरित हो सकता है; इस मनोवृत्ति को जब मूक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राणियों तक में देखी जा सकती है, तब ईश्वरावतारी पुरुष का 'लोकहिताय' तपोनिरत उसी तपो-भूमि में आनंद साम्राज्य नहीं स्थापित होगा ? तपस्या की यही तो परिणति है !

ज्ञान साधनारत आचार्य श्री केवल बुद्धिग्राह्य ज्ञानमार्ग मात्र से संतुष्ट नहीं। यह ज्ञान मार्ग आचार्यपाद के लिए सुगम हो सकता है। उन्हें साधारण मानव को इस ज्ञान-मार्ग की ओर उन्नयन करना है। उस के लिए विधि विहित कर्म करने की ओर प्रवृत्त कर, तद्द्वारा ज्ञान प्राप्ति के विधान प्रस्तुत कर, सामान्य मानव को ज्ञान प्राप्ति के लिए कर्मरत बनाना है। इस कर्मकांड की जटिलताओं में फंस कर मनुष्य कहीं ज्ञान मार्ग को भूले न - इसका भी ध्यान रखना उन्हीं का काम है। कर्म द्वारा जिस सिद्धि की साधना करनी होती है उसे प्राप्त करने के लिए अत्यंत सुलभ भक्ति मार्ग की ओर लोक जीवन को मोड़ना भी आवश्यक है। इस तरह लोक जीवन की प्रवृत्ति को ब्रह्म-प्राप्ति के चरम लक्ष्य की ओर उन्नयन करने तथा इन तीनों लक्ष्यों की ओर लोक-मानस को सचेत करने के लिए आचार्य श्री सदा अनुष्ठान लीन रहते हैं। इस तरह कर्म भक्ति और ज्ञान – इन तीनों मार्गों को प्रशस्त कर लोक-जीवन के पथ को परिष्कृत करना गुरुवर्य के अनुष्ठानों का मुख्य उद्देश्य है। आज के वैज्ञानिक युग में डर दिखा कर अथवा भेदभाव उत्पन्न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर आत्मतत्व पर लोगों में विश्वास पैदा करना संभव नहीं हो सकता। केवल शरीर-धारी परिवार युक्त देवी-देवता आज जनता के विश्वास-पात्र नहीं हो सकते। विश्व शांति एवं समताभाव की स्थापना के लिए अद्वैतभाव की ही शरण लेनी पड़ेगी। इसी अद्वैतभाव की नींव पर भारतीय समाज का पुनः संगठन करना है। भारत को अपनी आर्षेय संस्कृति के अनुरूप विकसित करना हो तो इसी अद्वैत तत्व की प्रतिष्ठा जन-मन में करनी होगी। इस महान् आदर्श की साधना के अंग-प्रत्यंग पर बारीकी के साथ आचार्यवर्य विचार करते हैं। तदनुसार अनुष्ठान आदि की योजना को रूपित करते हैं।

आचार्यवर्य के तत्वावधान में – चाहे श्रृंगेरी में या कहीं अन्यत्र – जो भी अनुष्ठान संपन्न होते हैं, उनमें हमें इस बात का अनुभव होता है कि आध्यात्मिक नींव पर एक सांस्कृतिक भव्यता का निर्माण हो रहा है। इन अनुष्ठानों में वर्ग या वर्ण भेद लक्षित नहीं होता। सभी तरह के और विभिन्न ज्ञान-स्तरवाले लोग सम्मिलित होते हैं। अनुष्ठान-जन्य पवित्र वातावरण में सने जनस्तोम में कोई भेद-भाव लक्षित नहीं होता।

आचार्य श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ गुरुवर्य के तत्वावधान में जो भी अनुष्ठान संपन्न होते हैं, – उनमें अध्यात्म पर आधारित सांस्कृतिक भारत का नव निर्माण होता हुआ-सा अनुभूत होता है। भौतिक असमानता मिटती हुइ-सी लगती है;

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आध्यात्मिक भूमि पर मानवता का विकास होता हुआ-सा लगता है। भारत पर विदेशी शासन के विरुद्ध राजनैतिक आंदोलन चला और विदेशी शासन हट गया। अपने ही भाई बन्धुओं ने चुने जाकर सत्ता अपने हाथ में ली और शासन स्वायत्त बना। शासकीय दृष्टि से प्राप्त स्वतंत्रता के संरक्षण के लिए भौतिक दृष्टि से भद्रता की व्यवस्था की जाने लगी। इस से अभिलषित भद्रता प्राप्त नहीं हो सकी। यह सही है कि कुछ बातों में भारतने भौतिक-समृद्धता के साधन जुटाये। परंतु, प्राप्त स्वतंत्रता में प्राण-प्रतिष्ठा नहीं हुई। राष्ट्र का शरीर बना, उसके अंदर राष्ट्र की आत्मा का प्रवेश अभी तक नहीं हो पाया। इस के लिए अध्यात्म की नींव पर राष्ट्र का उत्थान आवश्यक है। भौतिक स्वतंत्रता के साथ आध्यात्मिक स्वतंत्रता का समन्वय वांछनीय है। राष्ट्र और मानवता के हित की दृष्टि से इस वांछा-प्राप्ति के लिए मार्ग प्रशस्त करना है। श्री आचार्य वर्य द्वारा संचालित प्रत्येक अनुष्ठान में राष्ट्र और मानवता के हित की साधना की यह मजबूत नींव पड़ती जा रही है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१८

आचार्य वर्य श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ आत्मतेज से देदीप्य-
मान एक ज्योति-पुंज हैं जिससे निकली किरणें विश्व के
अज्ञनांधकार को निवारण करने की क्षमता रखती हैं। इसे
समझने के लिए चित्त की एकाग्र वृत्ति तथा उस आत्मतेज
को परख सकने की क्षमता की आवश्यकता है। यह तेज
इतना प्रखर है कि अज्ञान के मोटे से मोटे परत को भ
हटा दें। इस तरह की क्षमता उसी को मयस्सर होती है
जिस पर आचार्य वर्य की पूर्ण कृपा-दृष्टि हो। यह कृपा
पाना कोई कठन कार्य नहीं। क्योंकि आचार्य इतने सुलभ
लभ्य और दयालु हैं कि किसी को दुख में देख द्रवीभूत हो
जाते हैं। यह दयालुता मनुष्यमात्र तक सीमित नहीं; उनकी दयाद्र
दृष्टि की व्याप्ति पशु पक्षियों तक में है। "विद्याविनय संपन्ने
ब्राह्मणे गवि हस्तिनि। शुनिचैव श्वपाकेच पंडिताः समदर्शिनः।"
सब में ईश्वर को देखने की चक्षु के लिए कोई अपवाद नहीं
हो सकता। यह समदर्शिता सहज ही उपलब्द नहीं। व्यक्त
जगत् में अव्यक्त ईश्वर का दर्शन वही कर सकते हैं जिनके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंतश्चक्षु खुले हो। इस अंतश्चक्षु के खुलने पर ही एक प्रगतिशील विश्वव्यापी सामंजस्य का आविर्भाव होता है। आचार्यवर्य श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ की साधना का लक्ष्य यही सिद्धि है। ईश्वर के साम्राज्य को, जो हम सभी के अंदर है, इस भूमंडल पर प्रतिष्ठित करने के द्वारा यहाँ स्वर्ग-राज्य निर्माण करना, उस आत्मतेज का ही कर्म है।

आत्मतेज के प्रकट होने का मार्ग आँखें हैं। आचार्य-पाद की आंखों में उस तेज को बिरले ही आदमी देख पाएंगे। क्योंकि एक कारण तो यह कि अचार्य पाद की आँखें कभी-कभी चश्मे से ढके होते हैं। और दूसरा कारण यह कि आँखें किसी व्यक्ति पर सीधी नजर नहीं फेंकती। एक तीसरा कारण यह भी है कि कभी-कभी उन तेजपूर्ण नेत्रों पर काला चश्मा चढ़ा होता है जिससे वह प्रखर तेज शीतल हो कर लोगों पर पड़ सके। उनकी इस शीतल दृष्टि में लोगों के मन की थाह को परखने की शक्ति है। कोई भी जिस पर वह दृष्टि पड़ती है, कुछ भी छिपा नहीं सकता। "अहंब्रह्मास्मि शिवः केवलोऽहम्" की स्थिति में होने के कारण तेज ऐसा व्यापक और प्रखर है कि सब कुछ देख और परख सकने की क्षमता रखता है। तपस्वी आचार्य की तपश्शक्ति अपवाद कैसे बन सकती है?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१९

सन् १९५४ की बात है। उस समय स्व० बाबू राजेन्द्र प्रसाद भारत के अध्यक्ष थे। जगद्गुरु के दर्शन की इच्छा से वे श्रृंगेरी पधारे। उस समय श्री शंकरमठ शारदापीठ पर श्री श्री चंद्रशेखर भारती और श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ विराजमान थे। इन दोनों महातपस्वियों को एक साथ देखकर वे अत्यंत प्रभावान्वित एवं प्रसन्न हुए। दोनों गुरुवर्य तपस्सिध्द मुक्तात्मा; और मुक्ति साधनातत्पर बाबूजी, एक दूसरे के सम्मुख वार्तालाप में निरत। उस परिशुध्द तपः पूत वातावरण में यह देव-मानुष संयोग था। गुरुवर्यों की तपः पूत वाणी से और ईश्वर के अवतार को प्रत्यक्ष देखने से बाबूजी अनंद विभोर हो गये। खास कर आचार्यवर्य श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ की बौध्दिक शक्ति के प्रभाव से अत्यंत प्रभावित हुए। उनकी गंभीरवाणी, तर्कशक्ति, अभिव्यक्ति की सुष्ठुता और एक स्वतंत्र राष्ट्र को धार्मिक एंव दार्शनिक नींव पर विकसित करने की भावनाएँ – इन सब बातों को सुनकर बाबूजी अवाक्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रह गये। राष्ट्र रत्न त्यागी, विद्वान् सत्यवादी धर्मा-नुष्ठानासक्त राष्ट्रपति इन महा तपस्वी के प्रति अकृष्ट हुए विना कैसे रह सकेंगे। ज्ञान-पिपासु प्यासे आए थे तीर्थ की खोज में। विद्यातीर्थ में आकर प्यास बुझा कर लौटे।

इन पंक्तियों के लेखक ने, सन् १९५४ में ही बाबू जी के श्रृंगेरी हो आने के १५-२० दिन के बाद, गुरु दर्शन करने की आकंक्षा से श्रृंगेरी की यात्रा की। यह लेखक का सौभाग्य था की दोनों महातपस्वियों को वह एक साथ देख सका। श्री श्री चंद्रशेकर भारती महा सन्निधान से आशीर्वाद पाया और उनसे आदिष्ट हो कर श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ गुरुवर्य का दर्शन किया।

गुरुवर्य श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ श्री चरणों के पास बैठकर बातचीत करने का सुअवसर प्रप्त हुआ था-इन पङ्क्तियों के लेखक को। यह पहला हीं अवसर था कि मैं गुरुवर्य के इतने निकट संपर्क में आया। मैं समझता था कि इतनें महनों के साथ इतने निकट संपर्क आ सकनें की योग्यता मुझ जैसे अदने में कहाँ? उस हंसमुख आचार्य के सामनें जानें से डर रहा था। चंद मिनिटों में मेरा डर जाता रहा और उस पीठासीन संगमरमर-सी मूर्ति के प्रति ऐसा अकृष्ट हुआ कि मैं अपनें आपको भूल बैठा। बातचीत शुरु हुई। मंत्र मुग्ध की तरह उनकी तपःपूत वाणी को सुनता रहा। लगातार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो घंटों तक विभिन्न विषयों पर गुरुवर्य के उपदेश सुन सकने के मेरे सौभाग्य को सराहता रहा। हिन्दी प्रचार, सरकार के विधि-विधान, शासकीय सहूलियत की दृष्टि से स्वतंत्र भारत को एक इकाई बनाये रखने के तौर-तरीकों पर इस धर्म-सिंहासन चक्रवर्ती के विचार आदि आदि सुनकर अपने में विचार करता हुआ प्रणाम किया।

विभिन्न भाषा क्षेत्रों में विभक्त भारत को भाषाओं के आधार पर अनेक टुकड़ों में बाँटकर इन भाषा क्षेत्रों की जनता को पूर्ण विकसित होने की सुविधाएँ देते हुए एक राष्ट्र-भाषा के द्वारा इन इकाइयों को सांस्कृतिक एकता के सूत्र में बाँधकर समूचे राष्ट्र को एक इकाई के रूप में बनाये रखने के विषय पर गुरूवर्य के विचार अनुष्ठान में लाने के उपयुक्त हैं। इस स्वतंत्र भारत को एक सांस्कृतिक इकाई की दृष्टि से विकसित करने के लिए शासकीय सत्ता को शासन की सुविधा के लिए एक केन्द्र सरकारी शासन के अंतर्गत चार प्रतिनिधियों द्वारा पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण के क्षेत्रों में राज्य का संचालन हो। इस से भाषा इकाइयों में परस्पर सौहर्द्र भी बढ़ेगा, परस्पर सहयोग से भाषाओं का विकास होगा, भावात्मक एकता होगी। यों एक सांस्कृतिक स्वतंत्र भारत का निर्माण होगा। सरकारी यंत्र संचालन पर खर्च भी इतना अधिक न होगा। प्रत्येक भाषा-इकाई को एक राज्य बनाने पर संचालन सत्ता पर जितना अर्थव्यय होगा वह बहुत हद तक बचाया जा सकेगा; इस सार्वजनिक धन का उपयोग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सार्वजनिकों के लिए करने का अवसर भी मिलेगा—आदि आदि।

एक राष्ट्र, एक धर्म – धर्म समन्वित राजतंत्र द्वारा निर्मित शासकीय सत्ता ये विचार कितने क्रांतकारी हैं। एक त्यागी काषायधारी संन्यासी, जिन की तपस्या और आदर्श "सर्वेषामविरोधेन" और "लोकास्समस्ताः सुखिनो भवंतु" है, – इस लोक हित के विचार के विना और क्या विचार करेंगे ? इस तरह की राज्यव्यवस्था के लिए "न्यायेन मार्गेण महीं महीशाः परिपाल्यताम् ।" की इच्छा के विना और क्या चाहेंगे ?

"अहं ब्रह्मास्मि" से "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" तक पहुंचने की साधना का आरंभ "सर्वेषामविरोधेन" से हो कर "लोकाः समस्ताः सुखिनो भवंतु" में परिणत हो – यही तो अदर्श है! इस आदर्श की साधना के लिए अपने समूचे जीवन को धरोहर बना कर स्वयं आदर्श बन कर लोगों को इस आदर्श की ओर उन्नयन करना उन्हीं तपस्वी का काम है।

श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ की तपस्या का यह निर्दिष्ट आदर्श क्रांतिकारी लगनें पर भी अनुकरणीय है। यों सोचता हुआ आशीर्वाद लेकर अपने को धन्य समझता हुआ लौट आया। इस प्रथम दर्शन के पश्चात् धीरे-धीरे अपने जीवन क्रम में कई परिवर्तन मैंने स्वयं अनुभव किये। गुरुवर्य के प्रति आकर्षण बढ़ता गया। मेरी जिज्ञासा बढ़ती गयी। इस जिज्ञासा से प्रेरित हो कर ऐसे महात्मा की खोज करता रहा। बहुत भटका। मेरी जिज्ञासा का सही उत्तर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहीं नहीं मिला। इस के लिए बार-बार श्रृंगेरी भागा करता। अंततोगत्वा यहीं श्रृंगेरी में पूज्यपाद श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ गुरुवर्य के कृपाकटाक्ष से आलोड़ित मन को शांति मिली। उनकी वाणी से नहीं बल्कि मौनी ध्यानलीन यतिवर के दर्शन मात्र से।

गुरुवर्य श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ के सम्मुख जो भी जाएं वह इस ज्ञान प्रभा से अभिभूत हो ज्ञानमय जगत् में विचरण करता है। एक बार इस प्रकाश का सान्निध्य जिस ने पाया वह जीवन भर इस आभा में अपने को खोया खोया-सा पाता है और सर्वत्र उसी एक अखंड परब्रह्म के अस्तित्व का अनुभव करता है। अनेकता में एकता की अनुभूति होती है, व्यक्त में अव्यक्त का दर्शन पाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२०

किसी-किसी विशेष अवसर पर कहारों के कंधों पर की आड़ी स्वर्णमय पालकी में स्वामी जी विराजमन होते हैं। खास कर श्रृंगेरी की शारदामाई का उत्सव जब होता है तब रथारूढ़ माता के सामने पालकी पर चढ़े जानेवाले स्वमीजी का दर्शन बड़ा प्रभावशाली दृश्य होता है। प्रेक्षकों की भीड़ के बीच में पालकी पर बैठे आचार्य किरीटधारी होकर पीतांबर ओढ़े रथारूढ़ शारदा माता के सामने होते है। भीड़ को चीरता हुआ दोनों की सवारी श्रीमठ के महाद्वार से राजमार्ग पर पहुँचती है। रास्ते के दोनों ओर दूर दूर से इस अवसर पर दर्शनलाभ करने के ही उद्देश्य से आये हुए लोगों की भीड़ खचाखच भरी रहती है। जैसे जैसे दोनों की सवारी आगे बढ़ती जाती है वैसे वैसे भीड़ भी आगे सरकती हुई सवारी का अनुगमन करती है। इस अवसर पर मंडनमिश्र को वाक्यार्थ में हराने के बाद आदि शंकर उभय भारतीमाता शारदादेवी को साथ ले कर आ रहे हो –

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसा भान होता है। विद्या की अधिदेवी, विद्या का अनुगमन करती हुई तीर्थ का अनुसरण कर रही हो – ऐसा लगता है। स्वयं विद्या विद्यातीर्थ के पीछे-पीछे आती हुई आदि शंकर का स्मरण दिलाती है।

पूज्यपाद आचार्य श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ गुरुवर्य की विशाल दृष्टि केवल व्याख्यान सिंहासन के निर्दिष्ट क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है। आदिगुरु आचर्य आदि शंकर ने समस्त भारत को एक धार्मिक सूत्र में बाँध कर जिस सांस्कृतिक भारत का निर्माण करना चाहा था और जिस के लिए चारों धामों में चार ज्योति स्तंभ संजोये, इन ज्योति स्तंभों में स्निग्धता दे कर मंद प्रकाश को प्रखर बनाने की दृष्टि से उन धामों के पीठाधिपों को भी अपने साथ लेकर गुरुवर्य ने विचार विनिमय द्वारा जनमन में वैचारिक क्रांति ही पैदा की। भाव-संघर्ष की दुविधा को मिटा कर कर्तव्यानुष्ठान की ओर जनता को प्रवृत्त किया। यों समय के अनुसार जनता की धर्म-भावना को रूपित कर धार्मिक उच्छृंकलता को धर्मानुशासन द्वारा अनुशासन के अंदर लानें का मार्ग प्रशस्त किया। इस तरह संपूर्ण भारत को अपना कार्यक्षेत्र मान कर सब को अपना बनाने की विशाल-दृष्टि, उदार-भावना, पूज्यपाद की है। पूज्य आचार्य के इस कार्य ने आदि शंकर के उस महान् कार्य को एक नवीन रूप दिया। इस से पाठक यह न समझे कि इन आम्नाय पीठों के आचार्य अपने अपने निर्दिष्ट-क्षेत्रों में क्रियाशील न रहें। उनके सामने भी आदि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शंकर के उस आदर्श भारत का चित्र अवश्य था और है। परिसर प्रभाव के अनुसार उस सांस्कृतिक चेतना को जागृत कर धर्म-साम्राज्य निर्माण कार्य में वे पीठस्थ आचार्य भी क्रियाशील रहे हैं। संभवतः कुछ काल तक आपसी संपर्क न होने के कारण आपसी मेलमिलाप कम रहा हो। श्रृंगेरी के आचार्य श्री के प्रयत्नों सें तथा कथित यह कमी दूर हो गयी। इस से सांस्कृतिक भारत के निर्माण का कार्य सुगम हो गया। चारों धामों से निःसृत ज्योति समग्र भारत पर प्रकाश किरण फेंक रही थीं और हैं। जनता दिशादर्शन के लिए इन धामों की ओर हमेशा आशाभरी दृष्टि से देखती आ रही है और रहेगी भी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२१

यों तो आचार्य पूज्यपाद श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ स्वामी जी की विशाल दृष्टि केवल आदि शंकर निर्मित आम्नायपीठों तक ही सीमित नहीं। समग्र भारत में सांस्कृतिक साम्राज्य स्थापित करने की ओर उनकी प्रवृत्ति विशेष रूप से प्रभावोत्पादक है। इतना ही नहीं बल्कि उनके सांस्कृतिक-साम्राज्य की कल्पना विश्वव्यापिनी है। वे चाहते हैं स्वमत के आदर्शों पर स्थिर रहकर अनेकता में एकता के दर्शन पाने की साधना करें और तद्वारा विश्वमानवता में कल्पित भेद मिटा कर भावैक्य की नींव पर विश्व की एकता का निर्माण करें। भावैक्य साधना के लिए धर्म-समन्वय साधना जरूरी है। विभिन्न मत-धर्मों में विभक्त जन समुदाय को एक समन्वित धर्म सूत्र में पिरो कर सब को एक आदर्श की ओर उन्मुख करना, धर्म-समन्वय से भी अधिक अनिवार्य है। इस पीठिका पर आचार्य श्री विशिष्ट अवसरों पर साल में एक बार धर्म साहित्य सम्मेलन का संगठन कराते हैं। यह केवल श्रृंगेरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में ही संपन्न हो – ऐसा नहीं। विभिन्न स्थानों में सार्वत्रिक रूप से इन सम्मेलनों की व्यवस्था करवाते हैं। आचार्य श्री की यह योजना भौगोलिक एकता के साथ भावैक्य साधना द्वारा, समन्वित सांस्कृतिक साम्राज्य निर्माण करने की ओर एक मजबूत कदम है। राजनैतिक स्वातंत्र्य के साथ धार्मिक व सांस्कृतिक स्वातंत्र्य की स्थापना की ओर अग्रसर होने की यह प्रबल प्रवृत्ति है। सह-जीवन व सह-अस्तित्व की प्रचोदक शक्ति यह धर्म साहित्य सम्मेलन है। अपने ही लोगों के हाथ में सत्ता होने पर भी अपनी संस्कृति के अनुरूप सत्ता धारी राज्य संचालन करने में केवल भौतिक दृष्टि को ही प्रधानता दे रहे हैं, आध्यात्मिक चेतना पीछे की ओर हटती जा रही है। भौतिक और आध्यात्मिक समन्वय की भूमिका पर वैज्ञानिक संगठन द्वारा राज्य संचालन सांस्कृतिक भारत के निर्माण में सुगमता लाने के साथ-साथ एक स्वस्थ राष्ट्र के उदय होने के लिए प्रशस्त भूमिका की नींव डाल सकता है। इस महान् राष्ट्रीय कार्य में आचार्यपाद अपनी तपःशक्ति का विनियोग इन सम्मेलनों द्वारा कर रहे हैं। आदि शंकर भगवत्पाद केवल छः मतों की स्थापना कर षण्मत स्थापक बने थे। श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ भगवत्पाद सब मत-मतांतरों को समान दृष्टि से देखते हैं। सर्व समता, परमत सहिष्णुता, सौहार्द्र, सह-जीवन, सह-अस्तित्व का चरम आदर्श, एक राष्ट्र धर्म, श्रुति-स्मृति सम्मत राज्य संचालन आदि की प्रेरणा का एक ज्वलंत उदाहरण है पूज्यपाद का जीवन। उनकी तपस्या सृष्टि की विविधता में वैषम्य मिटा कर विविधता में सौहर्दा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की प्रतिष्ठा करने के लिए और इस अनेकता में एकता दर्शाने के लिए हैं। इस अंतश्चेतना को प्रबुद्ध करने के लिए विद्वत्सभाएँ, धर्म सम्मेलन आदि विविध अनुष्ठान कराते हैं। अन्यथा मुक्तात्मा के लिए इन सब की क्या आवश्यकता ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२२

अर्थ प्रतिपत्ति के लिए वाक् और अर्थ का संपृक्त होना जरूरी है। वाक और अर्थ का योग सृष्टि का मूल है। इन दोनों का योग जगत् पिता पार्वती-परमेश्वर का योग है। इसी लिए महाकवि कालिदास ने

"वागर्थाऽविव संपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये ।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ ॥" –

कहा। इसे समझने के लिए श्रद्धा-विश्वास का होना आवश्यक है। इसलिए गोस्वामी तुलसीदास ने कहा –

"भवानी शंकरौ वंदे श्रद्धा-विश्वास रूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यंति सिद्धाः स्वांतस्यमीश्वरं ॥" –

इस वाणी को सुनने की श्रद्धा और सुनी हुई वाणी पर विश्वास दोनों होने पर ही स्वांतस्थ ईश्वर का दर्शन हो सकता है। इस दर्शन के लिए स्वांतस्य दर्पण को साफ रखना होगा। इसे स्वच्छ करनेवाला श्रीगुरु चरण सरोज है। गुरु के अनुग्रह से ही इस रज की प्राप्ति होती है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसी लिए गोस्वामी ने कहा है –

"बंदउ श्रीगुरुचरण सरोज रज, निजमर मुकुर सुधारि।
बदनउ रघुवर विमलजस, जो दावकु फलचारि ।।" –

फलचारि (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) की प्राप्ति के लिए श्री गुरुचरण-सरोज-रज पाना आवश्यक है। इसे पाने के लिए चित्तशुद्ध के साथ आत्म सिद्धता होनी चाहिए।

चित्तशुद्धि एवं आत्म सिद्धता को प्राप्त करनें के लिए विकार रहित अंतःकरण से चित्त रूपी घृत की आहुति वाग्देवी में प्रज्वलित ज्ञान-विज्ञान रूपी अग्नि में देनी होगी। यह वाग्देवी है। कहा गया है "वाङ्मे मनसि प्रतिष्ठिता। मनो में वाचि प्रतिष्ठितं।" – मन वाक् का प्रेरक है। इस ज्ञानाग्नि को प्रज्वलित करने के लिए ज्ञान-विज्ञान रूपी अग्नि में चित्त रूपी आज्य की आहुति देनी होगी। यह इस ज्ञान यज्ञ का स्वरूप है। आचार्य इस महान् ज्ञान यज्ञ के अध्वर्यु हैं। आचार्य श्री के द्वारा संचालित होम हवन आदि अनुष्ठान इस सूक्ष्म तत्व के स्थूल और विवृत स्वरूप हैं। आचार्य की मौन तपस्या इस यज्ञ का मूल सूत्र है। अनुष्ठान इस सूत्र की विवृति और कार्य-कलाप उसकी व्याख्या एवं स्थूल तथा प्रत्यक्ष उदाहरण है। धर्म-सम्मेलन इस यज्ञ का बाह्याकार है। सम्मेलन स्थान इस ज्ञान-यज्ञ की यागशाला है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२३

अवतारी पुरुष साधारण जनता के बीच ही जनमते हैं, और सामान्य जीवन व्यतीत करते हैं। परंतु कुछ विशिष्ट पुरुषों के कार्य, विचार पद्धति, व्यवहार, बातचीत करने का ढंग आदि साधारण मनुष्यों से कुछ भिन्न होते हैं। इसी विशिष्टता पर उस मनुष्य का ज्ञान-स्तर औरों से ऊंचा माना जाता है और साथ ही सामान्य मनुष्य की श्रेणी से पृथक उनका व्यक्तित्व होता है। फिर भी सामान्य जनता के बीच रहने के कारण ऐसे व्यक्ति को आम लोगों का-सा आचरण करना पड़ता है। यह आचरण श्रीसामान्य को मार्ग-दर्शन करने के लिए होता है। मनुष्य की कमजोरी यह है कि जब वह कष्ट में फँसता है तब ईश्वर का स्मरण करता है। इष्टार्थ सिद्धि के लिए पूजा-पाठ व्रत-अनुष्ठान आदि में रत होता है। "दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोई।" वह इस तत्थ्य को समझ नहीं पाता कि "सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होइ।" मानव जीवन को इस तत्थ्य की ओर आकर्षित कर पूजा-पाठ और व्रत-अनुष्ठान करने की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेरणा देनें के लिए स्वयं आचार्य श्री पूजा-पाठ, व्रत-अनुष्ठान आदि किया करते हैं। कुछ प्रमुख पर्वों पर आचार्य वर्य के ये अनुष्ठान संपन्न होते हैं। उन पर्वों में आचार्यवर्य जहाँ भी होते हैं वहीं अनुष्ठान संपन्न करते हैं।

आचार्य पाद ऐसे अनेंक अनुष्ठानों में रत रहते हैं। इन कई अनुष्ठानों में एक ऐसा अनुष्ठान प्रतिवर्ष भाद्रपद पूर्णिमा के दिन होता है जब आचार्य उमा-महेश्वर की पूजा संपन्न करते हैं। विश्व निर्माता, नियंता और लयकर्ता महेश्वर-उमा समेत इस अनुष्ठान में आवाहित होते हैं। उमा प्रकृति का प्रतीक है, महेश्वर पुरुष का प्रतीक है। ये दोनों प्रतीक एक दूसरे में इस तरह विलीन हैं जिस से अपना स्वतंत्र अस्तित्व बना भी रहे और विलीन एकता भी दिखें। इस प्रकृति-पुरुष संयोग जन्य सृष्टि व्यक्त है तो प्रकृति-पुरुष इस व्यक्त में अव्यक्त हैं। आचार्यपाद का यह अनुष्ठान इसी अव्यक्त की प्रतीकात्मकता की व्याख्या करता है। साथ ही आदिम सृष्टि के माता-पिता का स्मरण ताजा कराता है। यह प्रकृति-पुरुष संयोग, व्यक्त विश्व की दुष्ट शक्तियों के दमन की पीठिका है। त्रिकालदर्शी इस तुंगा तीर के तपस्वी का आडंबर हीन यह अनुष्ठान, उपस्थित व्यक्ति के लिए भीतर-बाहर की दुष्ट शक्तियों के दमन करनें का आह्वान है। उमा-समेत महेश्वर की पूजा तपोनिरत अवतारी ईश्वर स्वयं आरंभ करते हैं। एक महेश्वर दूसरा ईश्वर। उं=शिवं मा=पतित्वेन मन्यते, अतः वह हैमवती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उमा है। घोर तप से मना कर शिव को पतिरूप में पाकर शिव के साथ संयुक्त हुई। इसलिए यह शिव महेश्वर है। उमा-महेश्वर की संयुक्त शक्ति नें ही देव सेनानी का सृजन किया। इस देव सेनानी ने राक्षसी शक्तियों का दलन कर दैवी शक्तियों का विकास किया था। इसी की स्मृति में यह अनुष्ठान है।

इस भव्य-दृश्य को देखनें का सौभाग्य तथा इस से प्रभावित होने का अवसर उसी को उपलब्ध होता है जिस में इस गूढ रहस्य को समझने की शक्ति हो और इस तत्व को हृदयंगम कर सकने का मस्तिष्क हो। पूजा करते समय बहुत लोग वहाँ एकत्र होते अवश्य हैं। परंतु लोग ऐसे महान् और प्रमुख अनुष्ठान में एकाग्र भाव से इस तत्व का मनन करते हैं या नहीं, पता नहीं।

उमा-महेश्वर व्रत का यह अनुष्ठान भादों की पूर्णिमा के दिन होता है। श्री आचार्यवर्य अपने नियमित नित्यानुष्ठान को समाप्त कर इस विशिष्ट अनुष्ठान में लगते है। यह अनुष्ठान मुख्यतया आराध्य और आराधक के बीच के व्यवधान को पाट कर आरधक को आराध्य में विलीन करने का पर्व है। एक प्रतीक, दूसरा उस प्रतीक की अभिव्यक्ति। एक निराकार दूसरा साकार। एक अव्यक्त दूसरा व्यक्त। व्यक्त की पूजा अव्यक्त के लिए होती है। व्यक्त और अव्यक्त का यह अभिनय लगातार तीन-चार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घंटों तक चलता है। एक 'ऋत' है तो दूसरा 'सत्य'। इस स्थिति में कौन किस की पूजा करते हैं? इस अनुष्ठान के संपन्न होते समय साक्षी हो कर देखते बैठे रहनेवाले प्रेक्षक के मन में ऐसे प्रश्न शृंकलाबद्ध हो कर खड़े होते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२४

आचार्य श्री विद्यातीर्थ पाद प्रातःकालीन अनुष्ठानों के पश्चात् तीर्थ विनयोग आदि कार्य समाप्त कर दर्शनार्थियों को दर्शन देते हैं। तत्पश्चात् अध्यापन कार्य में निरत होते हैं। कभी कभी समयाभाव के कारण यह अध्यापन कार्य दुपहर के लिए स्थगित भी हो जाता है कभी कभी। सामान्यतः अध्यापन कार्य रुकता नहीं। विशेष परिस्थितियों में, अन्यान्य अनुष्ठानों के अवसरों पर अध्यापन कार्य को छुट्टी देनी होती है। गुरुवर्य के इस अध्यापन में अध्येता छात्र विशिष्ट योग्यतावाले होते हैं। ये छात्र विशेष रूप से चुने जाते हैं। गुरुवर्य के पास शिक्षा पाने का भाग्य भी विशिष्ट ज्ञानस्तरवाले छात्रों को ही प्राप्त होता है। अध्यापन के समय गुरुवर्य की दृष्टि केवल पठ्य विषय तक ही सीमित नहीं रहती। वह छात्रों के मन-मस्तिष्क की थाह लेने में लगी होती है। पूर्णतया थाह लेने की प्रक्रिया कुछ समय तक चलने के पश्चात् उन अध्येता छात्रों में जो खरे उतरते हैं उन्हें उत्तराधिकार के योग्य मान कर उपयुक्त समय में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वहस्त से गुरुवर्य दीक्षा दे कर अनुग्रह करते हैं।

आचार्य के अनुग्रह से अनुग्रहीत छात्र ब्रह्मचर्य से सीधे संन्यास में प्रविष्ट होता है।

कई तरह की परीक्षाओं के पश्चात् पीठस्थ आचार्य उस छात्र को संन्यास दीक्षा देने के लिए उचित समय तक प्रतीक्षा करते हैं। समय की प्रतीक्षा दो दृष्टियों से होती है। एक संन्यस्त होनेवाले छात्र की सिद्धता और दूसरी आचार्य श्री के अंतर्मुखी होने की प्रवृत्ति।

आचार्य श्री इधर कुछ समय से अपनी प्रवृत्तियों में अधिकाधिक अंतर्मुखी होते हुए से लगते हैं। व्यावहारिकता के प्रति उदासीनता बढ़ती हुई-सी प्रतीति होती है। फिर भी धर्म-जागृति के उनके यत्न कम नहीं हो रहे हैं। धर्मानुष्ठान सामान्यतया सभी मतानुयायी किसी न किसी रूप में करते अवश्य हैं। आचार संबंधी भिन्नता के होते हुए भी धर्म का आदर्श एक है। परंतु सारा समाज मतीय दृष्टि से कई भागों विभक्त है। कोई बौद्ध, कोई जैन तो कोई शंकर मतानुयायी, कोई रामानुज पंथी तो कोई मध्वमतानुयायी तो कोई वीरशैव पंथी, कोई कबीर पंथी तो कोई नाथ पंथी, कोई सिद्ध पंथी तो कोई साधु संत के अनुयायी, कोई नानक पंथी तो कोई अकाली आदि आदि। इन सभी मत पंथों के अनुयायियों के लिए अपने अपने गुरु-पीठ, मठ, गद्दियाँ हैं। इन के एक एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अधिकारी है जो अपने अपने अनुयायियों को धार्मिक दृष्टि से दिशा दर्शन देते रहते हैं। इन पीठाधिपतियों, मठाधिपतियों एवं गद्दीधारियों आदि पंथ-प्रधानों से मौका मिलने पर धर्म जागृति संबंधी बातों पर श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ पाद विचार विनिमय करने से चूकते नहीं। आचार्य पाद बहुत आसानी से प्रसन्न हो जाते हैं। अपनी ही बात को मनानें का दुराग्रह आचार्य पाद में ईषदपि नहीं है। उनकी सदा यही अभिलाषा रहती है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी मान्यता के अनुसार अपने अपने धर्म-कर्म को माने तथा तदनुसार आचरण करें। आचार्य पाद की यह दृढ धारणा है कि प्रत्येक मत अच्छा है और प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार किसी भी मत का अनुयायी हो सकता है: हाँ, केवल इतना चाहते हैं कि वह अपनी मान्यता में श्रद्धा रखें और निष्ठा के साथ आचरण करें।

आजकल दिखनेवाली धर्म निरपेक्षता तथा धार्मिक वृत्ति के प्रति उदासीनता के कारण महान् मानसिक ग्लानी का अनुभव आचार्य करते हैं। स्वयं मुक्तात्मा होने पर भी मानवता के कल्याण कामना की दृष्टि से जगद्गुरु होने के नाते उन्हें इस ग्लानि का अनुभव करना पड़ता है। इस गुरु पीठ के अनुयायियों का कर्तव्य है कि वे गुरुवर्य के इस मानसिक दुःख को समझे और उन्हें निश्चिन्त रखें। उन्हें अपने अनुष्ठान में शांति के साथ लगने दें।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अद्वैततत्व भारतीय संस्कृति की बहुमूल्य संपत्ति है। इस संपत्ति का वितरण इस महान् तपस्वी के द्वारा हो रहा है। अध्यात्म शास्त्र के मर्मज्ञ महान् पुरुष प्राचीन काल में "कवि" के नाम से अभिहित होते थे। क्योंकि ये क्रांत दर्शी हैं। "कवयः क्रांत दर्शिनः।" आचार्यपाद ऐसे ही क्रांतदर्शी हैं। सूक्ष्म बुद्धि से ग्राह्य ब्रह्म की ओर अग्रसर हैं। ग्राह्य ब्रह्म की ओर जाने का मार्ग छुरे की धार के समान तेज्ञ है। कहा भी है – "क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया, दुर्गं पथस्तत्।" इस दुर्गम क्षुरधार-से तेज्ञ पथ पर आरूढ महापुरुष को उस मार्ग में चल सकने की शक्ति स्व-साधना की उपलब्धि है। वास्तव में इस साधना मार्ग के पथिक को व्यावहारिक जगत् के कार्य कलापों से सर्वथा मुक्त हो जाना चाहिए। आचार्यपाद इसी कारण से हाल में भावी आचार्य को दीक्षा दे कर धीरे धीरे व्यवहारों से मुक्त होते जा रहे हैं। श्री श्री आचार्य भारती तीर्थ महराज धीरे धीरे कार्य संभालने लगे हैं।

आचार्य श्री भारती तीर्थ तेजस्वी विद्वान् एवं अद्वितीय प्रतिभा संपन्न है। संन्यास ग्रहण के पश्चात् आपके व्याख्यानों से शिष्य वृन्द बहुत प्रभावित हुआ है।

धर्म एक जमाने में हर तरह के सद्व्यवहार का बोधक था। आज इसका अर्थ संकुचित हो कर केवल एक व्यावहारिक विशिष्ट जीवन प्रकार मात्र का बोधक बन गया है। आज की वैज्ञानिक चेतना ने हमारे जीवन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में परंपरागत विश्वासों की जड़ कोहिला दिया है। आस्तिक समाज किंकर्तव्य विमूढ़ है। धर्म कर्म की श्रद्धा एक सीमित समाज की परिधि में जीर्णावस्था में लड़खड़ा रही है। सत् चिदानंदविलास की अध्यात्म-प्रयोगशाला में जो अनुसंधान चल रहा है उसकी ओर आँख लगाये आशाभरी दृष्टि से लोग देख रहे हैं। इन लोगों को सन्मार्ग की ओर प्रवृत्त कर स्वतंत्र राष्ट्र की सत्प्रजा बनाने का उत्तरदायित्व पूज्य श्री श्री भारती तीर्थ गुरुवर्य पर पड़ा है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२५

हम ने तपोमूर्ति जगद्गुरु श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ महास्वामी के इस जीवन वृत्तांत को तपोभूमि श्रृंगगिरि के आद्य तपस्वी महर्षि विभांडक और ऋष्यश्रृंग पूज्यपाद के पुनीत नाम-स्मरण से आरंभ किया। आदि शंकर पूज्यपाद द्वारा स्थापित इस आम्नाय का परिचय एवं उन महापुरुष की परंपरा का साधारण परिचय दे कर श्रीमद्विद्यातीर्थ पूज्यपाद के पूर्वाश्रम के परिचय के साथ उन महात्मा की तपस्या तथा उन अनुभूतियों का निवेदन स्वानुभूति के आधार पर प्रस्तुत किया है। संभव है कि ऐसी अनुभूतियाँ और लोगों को भी हुई हो। दूसरों की अनुभूतियों से हमें क्या संबंध ? ईश्वरावतारी महापुरुषों की महिमा अपरंपार है। जैसी जिनकी भावना तैसी उनकी अनुभूति। मानव शरीर धारण करने पर भी ईश्वर स्वतंत्र है। श्री श्री पूज्यपाद के दर्शन मात्र से हम जैसे साधारण जन का मानसिक द्वंद्व दूर हो जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस दक्षिणाम्नाय पीठ की आचार्य परंपरा में आदि शंकर के पश्चात् समग्र भारत का संचार कर सर्वत्र धर्म-साम्राज्य स्थापित करनेवालों में श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ पूज्य पाद अग्रगण्य हैं। भौतिकता पर विकसित जड़ सभ्यता आज मानव-जीवन के सभी पहलुओं पर अपना प्रभुत्व जमा बैठी है। अभौतिक अध्यात्म चेतना पर विकसित सांस्कृतिक भव्यता भस्माच्छादित अग्नि कण की तरह प्रभाहीन हो रही है। ऐसे मौके पर अवतारी ईश्वर की संसार में आवश्यकता है। "यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति और अधर्मस्य अभ्यु-त्थानं भवति तदा आत्मानं सृजामि" – धर्म ग्लानि के ऐसे समय पर धर्मोद्धार करने के लिए ईश्वर वचन बद्ध हैं। श्रीमद्विद्यातीर्थ के रूप में अवतरित ईश्वर धर्म-संस्थापन के ही लिए हमारे बीच उपस्थित हैं।

आज एक ओर सत्ता राजकीय स्तर पर एक धर्म निरपेक्ष समाज निर्माण करने के लिए कटिबद्ध हो कर उस दिशा में अग्रसर हो रही है। सत्ताधारी जातिगत भेद को मिटा कर सब को एक स्तर पर बिठाना चाहते हैं। धार्मिक जीवन प्रक्षुब्ध स्थिति में से हो कर गुजर रहा है। भारत के जीवन में तेरहवीं–चौदहवीं सदियों में धार्मिक एवं लौकिक व्यवहार की दृष्टि से जड़ता छा गयी थी। उन दिनों तपो निधान योगीश्वर श्री विद्यातीर्थ व्याख्यान पीठाधिपति थे। धर्म-ग्लानी के उस समय में धार्मिक चेतना को जागृत करना, जन जीवन में धर्म श्रद्धा की प्रतिष्ठा करना बहुत ही आवश्यक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था। इस के लिए श्री श्री विद्यातीर्थं गुरुवर्यं ने श्री भारती तीर्थं एवं श्री विद्यारण्य जैसे पूज्य विद्वान् एवं तपस्वियों को नियुक्त किया। इन महात्माओं ने दक्षता के साथ राष्ट्रोद्धार के इस महान् कार्य को संपन्न ही नहीं किया, अपितु सनातन धर्म का उद्धार कर इस धर्म की नींव पर एक नये राज्य का निर्माण किया। विजयनगर साम्राज्य का इतिहास इस बात की गवाही दे रहा है।

आज भी स्थिति तेरह–चौदहवीं सदी की स्थिति से भिन्न नहीं है। फरक इतना है कि वैज्ञानिक चेतना ने शुद्ध ज्ञान-चैतन्य को पराजित करने की स्पर्धा में बदलती हुई सामाजिक स्थिति को दृष्टि में रखकर अमीरी गरीबी के भेद को मिटाकर वर्ण-वर्ग भेद रहित धर्म निरपेक्ष समाज निर्माण की ओर कदम बढ़ाया है। सनातन तपस्वियों ने भी वैज्ञानिक अनुसंधान कर कहा था 'विज्ञानं ब्रह्मेतिव्यजानात्'। परंतु उनका वह विज्ञान संतुलित था और धर्म तत्व के साथ समन्वित था। इसी संतुलन एवं समन्वय की भित्ति पर धर्म-सौध की प्रतिष्ठा उपनिषत्कालीन तपस्वियों ने की थी। यह सार्वकालिक एवं सार्वदेशिक सत्य के रूप में आज भी स्वीकृत है। इन्हीं महानों की परंपरा में अवतारी महात्माओं ने जन्म ग्रहण किया। इन की एक लंबी श्रृंखला है। इस श्रृंखला की कड़ियों में जैसे आदि शंकर अवतारी हुए वैसे ही श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थं तक तपस्वी अवतरित हुए हैं। इन सभी महात्माओं ने लगातार धर्मज्योति को संजोये रखा और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संजोते आ रहे हैं।

आदि शंकर द्वारा स्थापित यह शारदा पीठ सदा से धर्म की रक्षा करता आ रहा है और राजकीय क्षेत्र में सत्ता-धारियों को धर्म का बल दे कर एक संतुलित राज्य व्यवस्था के लिए दिशा दर्शन देता आ रहा है।

वर्तमान मनोवृत्ति भौतिक-विकास की ओर बड़ी तेजी से अग्रसर हो रही है। इस भौतिकता के बहाव में जनता बहती जा रही है। आज मनुष्य जीवन में वैज्ञानिक नव नवीन आविष्कारों से उथल-पुथल के साथ एक भारी बवंडर उठ खड़ा हुआ है। जीवन की गति का गंतव्य-स्थान अनिर्दिष्ट है। एक ही पटरी पर तेजी से आमने सामनें आनेवाले दो रेल के इंजिनों का टक्कर खाकर चकनाचूर हो जाना निश्चित है। आज के मानव की जीवन-गति कहाँ कब कैसा और किससे टकरा जाएगी और चकनाचूर हो जायगी कहा नहीं जा सकता। ऐसी स्थिति में मानवता की रक्षा केवल एक धर्म-बुद्धि ही कर सकती है।

धर्म-बुद्धि बाजार में बिकनेवाली चीज नहीं। यह एक स्वतः प्रेरणा से प्राप्त होनेवाली शक्ति है। संत महात्मा इस प्रेरणा के मूल स्रोत हैं। भौतिक समृद्धि के आकर्षण में ओत प्रोत मानवता को अध्यात्म-चेतना की ओर लौटना पड़ेगा। सच्चिदानंदविलास के तपस्वियों की तपस्या की तरंगें तुंगा की वीचियों में मिलकर एकाकार हो इस अद्वैत को भावना का उद्घोष नहीं कर रही है?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुंगातीर के विद्यातीर्थ कर्म-भक्ति-ज्ञान का त्रिवेणी संगम है। सच्चिदानदविलास ज्ञानानुसंधान का कर्मागार है। श्री विद्यातीर्थ श्रीपाद इस कर्मागार के अधिष्टिता हैं। इस कर्मागार में उत्पन्न होनेवाला ज्ञान-रूपी विद्युत् अज्ञानांधकार को दूरकर ज्ञान प्रकाश से विश्व को द्योतित कर सकता है। ज्ञानवाहिनी तारों में इस विद्युत का संचार कराने के लिए स्विच का बटन दबाना मात्र पर्याप्त है। ज्ञानवाहिनियाँ जगमग हो उठेंगी। इस प्रकाश में विश्व मानवता का दर्शन होगा। आपसी भेद भाव मिट जाएगा। मानव कल्याण भावना से प्रेरित चेतना विश्व-कल्याण करेगी।

ॐ तत्सत्

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
3	17	अ ाघ	अबाघ
4	21	रागद्वेषयुक्त	रागद्वेषमुक्त
5	9	निषवर्ष	निष्कर्ष
7	23	प्रतिष्तिठ	प्रतिष्ठित
8	19	प्रतिष्टित	प्रतिष्ठित
13	7	ज्ञानि	ज्ञानी
20	15	देने के मात्र	देने मात्र
26	10	कैयु	कैपु
27	4	चुना	चुनना
"	"	के लिए एक	के लिए
"	8-9	शामाशात्री	शामाशास्त्री
31	15	वातो तुरन्त	बातों
39	5	भित्ती	भित्ति
42	23	करना है	करना होता है
43	5	संभालने	संभालते
46	12	वेदिक	वैदिक
49	10	सैं	से
51	16	जातो	जाती
52	5	उपलब्द	उपलब्धि
"	17	मुट्टी	मुट्ठी
53	2	तया	तथा
58	1	अनुस्धान	अनुसंधान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आ

59	4	सचालित	संचालित
62	8	चलित	चालित
66	6	भ	भी
67	18	व	वह
68	7	मुर्कि	मुक्ति
	12	शत्कि	शक्ति
	14	तर्कशत्कि	तर्कशक्ति
		अभिव्यत्कि	अभिव्यक्ति
69	17	संपर्क	संपर्क में
73	2	विराजमन	विराजमान
77	24	सौहार्दा	सौहार्द्र
79	14	सरोज	सरोजरज
80	2	निजमर	निजमन
	3	दावकु	दायकु
		चित्तशुद्ध	चित्तशुद्धि
	10	वाग्देवी	वाक् दैवी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुबन्ध–१

आचार्य शंकर भगवत्पाद के जन्म-काल के विषय में अनेक विवाद चल पड़े हैं। भारतीय दर्शन शास्त्र के संशोधकों के अनुसंधानों के अनुसार अब यह निश्चित माना गया है भगवत्पाद शंकर का जन्म काल ई० सन् 788 है और विदेह मुक्ति ई० सन् 820 में हुई है। यह भी सिद्ध बात है कि इन भगवत्पाद शंकर ने चार आम्नाय पीठों की स्थापना की। पाश्चात्य एवं पौर्वात्य दार्शनिकों ने इस शंकर दर्शन के इतिहास का अनुसंधान कर जनन काल और मुक्ति काल का निर्णय इस उपर्युक्त रीति से किया है और इस बात को भी स्थिर किया है कि भगवत्पाद ने निश्चित रूप से चार ही आम्नाय पीठों की स्थापना की।

इन अनुसंधान कर्ता विद्वानों के निर्णय को सर्वत्र मान्यता प्राप्त है। इन विषयों में अनुसधान कार्य रुका नहीं, चल ही रहा है। जब तक अन्यथा निर्णय न होगा तब तक इसी निर्णय को प्रमाण मान कर चलने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। शांकर दर्शन के मूल-स्रोत और उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काल निर्णय की खोज इतिहास के अनुसंधान-कर्ताओं पर छोड़ देना ही उचित है। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर जो निर्णय हुआ है उसी को प्रमाण मानकर चलना युक्त है और यही सही रास्ता है।

आचार्य भगवत्पाद शंकर द्वारा स्थापित और अनुसंधानों द्वारा निर्णीत चारों आम्नाय पीठ इसी ऐतिहासिक निर्णय को प्रमाण मान कर चले तो उत्तम होगा। क्योंकि वर्तमान मान्यता के अनुसार स्वीकृत विर्णय सर्वत्र समान रूप से समादृत है। इसके अलावा ये आम्नाय पीठ एक ही आचार्य द्वारा स्थापित। सम-सामयिक होने के कारण वर्तमान मान्यता को स्वीकार कर चलना युक्ति संगत भी है।

हो सकता है, भगवान् शंकर ने कई बार अवतार ग्रहण किया हो। परन्तु भिन्न भिन्न समयों में शिवजी के अवतार सभी शंकरों ने आम्नाय पीठों की स्थापना नहीं की होगी। यों भिन्न भिन्न समयों में अवतरित शंकरों के द्वारा स्थापित कई आम्नाय पीठ होने चाहिए। परन्तु ऐतिहासिक संशोधनों ने स्पष्टतया केवल चार आम्नाय पीठों का ही उल्लेख किया है। भगवत्पाद शंकर से संबन्धित अनेक स्थान है। कई ऐसे स्थान हैं जहाँ शंकर भगवत्पाद ने शास्त्रार्थ कर विजय पाई थी; कई ऐसे भी स्थान हैं जहाँ उन्होंने सत्य सनातन धर्म का उपदेश दिया था; ऐसे भी कई जगह हैं जहाँ भगवत्पाद ने ग्रन्थों की रचना की। शंकर भगवत्पाद के चरण रज से पुनीत ये सभी स्थान वंदनीय और पूज्य हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसी तरह से शंकर भगवत्पाद के देहत्याग के स्थानों के बारे में भी अनेक मत हैं। आनंदगिरि के शंकर विजय में कांची को देहत्याग का स्थान बताया तो माधवीय शंकर विजय ने बदरी केदार से होकर कैलास में शरीर त्याग बताया, चिद्‌विलास शंकर विजय बताता है कि बदरिकाश्रम में दत्तात्रेय गुहा में प्रविष्ट हुए। श्रृंगेरी के गुरुपरंपरा काव्य में नेपाल के सिद्धेश्वर से दत्तात्रेयाश्रम में आकर वहाँ दंड कमंडल का त्याग किया। यह भी कहा जाता है कि यहीं भगवत्पाद का दंड एक वृक्ष के रूप में और कमंडल एक सरोवर के रूप में स्थित हैं। यहाँ पर दत्तात्रेय से वार्तालाप करते हुए वहीं रह गये। त्रिचूर के गोविंदनाथ रचित केरलीय शंकर विजय बताता है कि भगवत्पाद ने त्रिचूर के वृषाचल मंदिर के गर्भगृह से सूर्य मंडल पर चढे। काश्मीर के लेखक श्रीनिवासालय रचित संस्कृत का शंकर जीवन चरित बताता है कि अंतिम बार भगवत्पाद ने काश्मीर में ही दर्शन दिये।

इस तरह अनेकों के अनेक मत हैं। प्रत्येक मत अपनी अपनी बात को पुष्ट करता है। इस तरह करने से अनेक भ्रामक मनोवृत्तियां उत्पन्न हो गयी हैं। इन सब से हमें क्या मतलब? आदि देव शंकर के कई अवतार विभिन्न स्थानों में कई बार हुए होंगे। ये सभी अवतार प्रागंतिहासिक युग के होंगे। हमारे समय के अवतारी ईश्वर शंकर भगवत्पाद हैं जिनका जन्म ई० सन् 788 में और विदेह मुक्ति ई० सन् 820 मानी गयी है। अब तक के अन्वेषणों से ऐतिहासिकों ने इस समय को उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर स्थिर किया है। इन्हीं भगवत्पाद शंकर ने वैदिक धर्म को पुनरुज्जीवित कर इस के प्रचार व अनुष्ठान के लिए चारों दिशाओं में आम्नाय-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीठों की स्थापना की। अद्वैत दर्शन द्वारा सभी मत-मतान्तरों में एकता दर्शाकार लोक जीवन में शांति की स्थापना की।

ऐसे अवतारी महा पुरुष अविनाशी होते हैं। ऐसे का जन्म ही किसी महान् उद्देश्य को लेकर होता हैं। जन्म के लिए स्थन भी अनिर्दिष्ट होता है। स्वेच्छा से निर्दिष्ट स्थान में अवतरित होते हैं, उद्दिष्ट कार्य की पूर्ति के वाद शरीर त्यागते हैं। इस त्याग के लिए भी स्थान वही होता है जहाँ उद्दिष्ट कर्तव्य समाप्त होता है। सर्वांतर्यामी ईश्वर कहाँ नहीं है। सर्वत्र व्याप्त होने के कारण कहाँ जाने पर शरीर से अलग होना होगा इसे बताने की आवश्यकता नहीं। जहाँ इच्छा होती है वहाँ उसका त्याग करते हैं।

भक्त जहाँ हो वहाँ भगवान् है। समस्त सृष्टि में भगवान् है। एक ही समय में अनेक स्थानों में भगवान् से साक्षात् होना भक्तों के लिए असंभव भी नहीं। किसी को केदार में हुआ तो किसी को काश्मीर में तो किसी को कैलास में। किसी को सिद्धेश्वर में हुआ तो किसी को वृषाचल मंदिर में। इस तरह उस भक्त पराधीन भगवान् भक्तों को दर्शन देते हैं।

परन्तु यह निश्चित सत्य है अवतारी पुरुष मानव मात्र के स्मृति–पटल पर सदा जीवित होते हैं। किसी मानव कार्य को संपन्न करने के लिए वह अवतारी सत्य शरीर धारण करता है और कार्य संपन्न होने के वाद शरीर को छोड़ देता है। न जनमता है न मरता है। वह सदा रहता है। अस्तु;

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपलब्ध ऐतिहासिक आधार सामग्री से उस अविनाशी सत्य को कब कहाँ कौन शरीर मिला और कहाँ कब उस शरीर को (इस अविनाशी सत्य ने) छोडा—इस की खोज मनुष्य करने लगता है। इन अन्वेषकों को उस अविनाशी सत्य का ज्ञान होने पर भी वे साधारण जनता के लिए यह कार्य आवश्यक मानते हैं। साधारण जनता उस स्थूल भौतिक आधार को चाहती है जिस से वह अपनी प्राचीनता या अर्वाचीनता के प्रति गर्व कर सके।

इस प्राचीन अर्वाचीन के झमेले में पड़कर लोग असली चीज को भूल जाते हैं। उस अतिमानव महान् पुरुष ने समस्त लोक की सुख-शांति के लिए क्या उपदेश दिये और उनका अनुष्ठान हम कहाँ तक कर पाये हैं– इसकी ओर ध्यान देकर आत्मनिरीक्षण करना, इन सब अन्वेषणों से विशेष महत्व का कार्य है। जिस महापुरुष का संकल्प ही "सर्वेषां अविरोधेन" है और संकल्प सिद्धि "लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु" हैं—ऐसे आदर्श रूप मुक्त पुरुष का आदर्श एकदेशीय नहीं। इतने बड़े आदर्श को विश्व मानवता के सामने स्वोदाहरण द्वारा प्रस्तुत किया आचार्य भगवत्पाद ने। मानवता को ऐसा महान् संदेश देनेवाले भगवत्पाद शंकर का जन्म और विदेह मुक्ति के समय को लेकर असली आदर्श को गौण बना देना विशेष रूप से वाँछनीय हैं और अधिक अंतर्मुखी हो कर आदर्श की ओर उन्मुख होना कर्तव्य है।

भगवान् साधारण मानव समाज में अवतरित हो कर आदर्श जीवन-यापन करते हुए, जनता के सामने जीवन के चरमावधि-लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनुष्ठानों द्वारा मार्ग दर्शाते हैं। उस चरमा-वधि-लक्ष्य को जीवन का आदर्श बनाकर उस दर्शाये हुए मार्ग-पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चलते हुए आगे बढ़ना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य होना चाहिए। कर्तव्य निष्ठा के साथ साथ आत्म-परीक्षण करते हुए यह समझने की कोशिश करनी चाहिए कि हम आदर्श के कितने निकट पहुँचे हैं या कितने दूर पर हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुबन्ध–२

आचार्य शंकर द्वारा सत्य-धर्म के प्रचार एवं प्रसार के महान् कार्य को संपन्न करने के लिए अपनें प्रमुख चारशिष्यों को प्रहरी बना कर समग्र भारत को सांस्कृतिक चेतना द्वारा आदर्श भारत के निर्माण करने का कार्य भार सौंपा। भावैक्य साधना द्वारा एक सांस्कृतिक भारत के निर्माण के महान् राष्ट्रीय कार्य का संपादन निम्न लिखित ये चार इतिहास प्रमाणित प्रसिद्ध आम्नाय पीठ करते आये हैं।

आम्नाय–परिचय

1) ज्योतिर्मठाम्नाय :–

उत्तर दिशा में बदरीनारायण मठ का "ज्यीतिर्मठ" नाम है।

संप्रदाय :— "आनंदवार"।

पद :— गिरि, पर्वत, सागर।

क्षेत्र :— बदरिकाश्रम।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देवता :— नारायण ।

देवी :— पूर्णागिरि ।

तीर्थ :— अलकनंदा ।

वेद :— अथर्व ।

ब्रह्मचारी :— आनंद ।

प्रथम आचार्य :— तोटकाचार्य ।

गोत्र :— भृगु ।

महावाक्य :— "अयमात्मा ब्रह्म" ।

शासनाधीन क्षेत्र :— दिल्ली (कुरु), जम्मूकाश्मीर, (काम्बोज) पंजाव, उत्तर प्रदेश (पांचाल) का पश्चिम भाग आदि ।

2) गोवर्धन मठाम्नाय :-

पूर्व दिशा में पुरीमठ का "गोवर्धन मठ" नाम है ।

संप्रदाय :— "भोगवार" ।

पद :— वन, अरण्य ।

क्षेत्र :— पुरुषोत्तम ।

देवता :— जगन्नाथ ।

देवी :— विमला ।

तीर्थ :— महोदधि ।

वेद :— ऋग्वेद ।

ब्रह्मचारी :— प्रकाशक ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रथम आचार्य :— पद्मपाद।

गोत्र :— काश्यप।

महावाक्य :— "प्रज्ञानं ब्रह्म"।

शासनाधीन क्षेत्र :— भागलपुर (अंग) बंगाल (वंग) कलिंग, विहार (मगध) उड़ीसा (उत्कल) बर्बर प्रदेश।

3) श्रृंगेरी मठाम्नाय :–

दक्षिणाम्नाय मठ श्रृंगेरी में है जिसे "श्रृंगेरीमठ" के नाम से आचार्य शंकर ने सर्व प्रथम आम्नाय पीठ स्थापित किया।

संप्रदाय :— "भूरिवार"।

पद ;— सरस्वती, भारती, पुरी।

क्षेत्र :— रामेश्वर।

देवता :— आदिवराह।

देवी :— कामाक्षी।

तीर्थ :— तुंगभद्रा।

वेद :— यजुर्वेद।

ब्रह्मचारी :— चैतन्य।

प्रथम आचार्य :— सुरेश्वराचार्य।

गोत्र :— भूर्भुवः।

महावाक्य :— "अहं ब्रह्मास्मि"।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शासनाधीन क्षेत्र :— कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र और महाराष्ट्र आदि पंच द्राविड़ प्रदेश।

4) द्वारका मठाम्नाय :–

पश्चिम दिशा में द्वारकापुरी मठ ही "द्वारकामठ" है।

संप्रदाय :— "कीटवार"।
पद :— तीर्थ, आश्रम।
क्षेत्र :— द्वारका।
देवता :— सिध्देश्वर।
देवी :— भद्रकाली।
तीर्थ :— गोमती।
वेद :— सामवेद।
ब्रह्मचारी :— "स्वरूप"
प्रथम आचार्य :— हस्तामलक।
गोत्र :— "अविगत"।
महावाक्य :— "तत्वमसि"।
शासनाधीन क्षेत्र :— सिंधु प्रदेश, मारवाड-सौराष्ट्र गुजरात, व्रजभूमि तथा इनके मध्यवर्ती प्रदेश।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनुबंध–३

श्री शंकर भगवत्पाद धर्मग्लानी के समय धर्मोद्धार करने के लिए अवत्तरित भगवान् ईश्वर है, ऐसी मान्यता लोक प्रसिद्ध है। जब जब धर्म-संकट उत्पन्न होता है तब तब धर्म-प्रतिष्ठा के लिए वे अवनार ग्रहण करते हैं। इस तरह यह धर्म ग्लानी कई बार हुई होगी और ईश्वर भी कई बार अवतरित हुए होंगे। इन सभी अवतारों का इतिहास जानना असाध्य है। पुराणों के, जनश्रृतियों के आधारों पर इस संबन्ध में कुछ ऊहापोह हो सकता है। यह प्रागैतिहासिक विषय है। आज की वैज्ञानिक-चेतना हमारे महापुरुषों की ऐतिहासिकता को जानने के लिए उत्सुक है। इस लिए वह भारतीय प्राचीन इतिहास में इन महा पुरुषों की जन्मकुण्डली तक खोजने में प्रवृत्त है। ऐसा प्रत्येक अनुसंधान कर्ता अपने लिए उपलब्ध आधार सामग्री या जनश्रुतियों के आधार पर अपने अपने ढंग से निर्णय सुनाते हैं। इन में एक मत नहीं। अतः ईश्वरावतारी शंकर भगवत्पाद के विषय में भ्रामक विचार फैले हुए हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन सभी अनुसंधान कर्ताओं में बहुमत से जो समय निश्चित मान लिया गया है वह इस प्रकार है।

आचार्य भगवत्पाद शंकर का जन्म ई० सन् 788 में
और विदेह मुक्ति ई० सन् 820 में है।

भगवत्पाद शंकराचार्य के प्रधान शिष्य चार। ये चारों भारतीय अद्वैत दर्शन के इतिहास में प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। डॉ. टी. एम. पी. महादेवन - संटर आफ अड्वान्सड् स्टडी आफ फिलासफी के डायरेक्टर – जैसे प्रसिद्ध विद्वान और तज्ञ व्यक्तियों ने इस बात को प्रामाणिक ठहराया है कि सर्वश्री तोटकाचार्य, पद्मपादाचार्य, सुरेश्वराचार्य और हस्तामलकाचार्य श्री शंकर भगवत्पाद के प्रमुख शिष्य थे और भगवत्पाद द्वारा स्थापित चार आम्नाय पीठों के प्रथमाचार्य थे। ज्योतिर्मठ में तोटकाचार्म की, गोवर्धनमठ में पद्मपादाचार्य की, श्रृंगेरीमठ में सुरेश्वराचर्य की, एवं द्वारकामठ में हस्तामलकाचार्य की परंपरा आज तक अबाध गति से और अक्षुण्ण होकर चलती आयी है। प्रस्तुत पुस्तक में केवल दाक्षिणाम्नाय श्रृंगेरी मठ की परंपरा दी गयी है। यह इसलिए कि पुस्तकीय विषय का संबन्ध इस आम्नाय से है।

गुरुपरम्परा

शुभ नाम	संन्यास		विदेहमुक्ति
१. श्री शंकर भगवत्पाद	ई. सन्. 788	से	ई. सन्. 820
२. श्री सुरेश्वराचार्य	,, 813	,,	834

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३. श्री नित्यबोधघन	ई. सन्.	818	ई. सन्.	848
४. श्री ज्ञानघन	,,	846	,,	910
५. श्री ज्ञानोत्तम	,,	905	,,	954
६. श्री ज्ञानगिरि	,,	950	,,	1038
७. श्री सिंहगिरि	,,	1036	,,	1098
८. श्री ईश्वरतीर्थ	,,	1097	,,	1146
९. श्री नरसिंहतीर्थ	,,	1146	,,	1229
१०. श्री विद्याशंकरतीर्थ	,,	1228	,,	1333
११. श्री भारतीकृष्णतीर्थ	,,	1328	,,	1380
१२. श्री विद्यारण्य	,,	1331	,,	1386
१३. श्री चन्द्रशेखर भारती (प्रथम)		1368	,,	1389
१४. श्री नरसिंह भारती (प्रथम)		1388	,,	1408
१५. श्री पुरुषोत्तम भारती(प्रथम)		1406	,,	1448
१६. श्री शंकर भारती		1429	,,	1455
१७. श्री चंद्रशेखर भारती(द्वितीय)		1449	,,	1464
१८. श्री नरसिंह भारती (द्वितीय)		1464	,,	1479
१९. श्री पुरुषोत्तम भारती(द्वितीय)		1472	,,	1517
२०. श्री रामचंद्र भारती		1508	,,	1560
२१. श्री नरसिंह भारती (तृतीय)		1557	,,	1573
२२. श्री नरसिंह भारती (चतुर्थ)		1563	,,	1576

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२३.	श्री नरसिंह भारती (पंचम)	ई. सन्. 1576	ई. सन्.	1600
२४.	श्री अभिनवनरसिंहभारती (प्रथम)	1599	,,	1623
२५.	श्री सच्चिदानंद भारती (प्रथम)	1622	,,	1663
२६.	श्री नरसिंह भारती (षष्ठ)	1663	,,	1706
२७.	श्री सच्चिदानंदभारती (द्वितीय)	1706	,,	1741
२८.	श्रीमदभिनव सच्चिदानंद भारती (प्रथम)	1741	,,	1767
२९.	श्री नरसिंह भारती (सप्तम)	1767	,,	1770
३०.	श्री सच्चिदानंदभारती (तृतीय)	1770	,,	1814
३१.	श्रीमदभिनवसच्चिदानंदभारती (द्वितीय)	1814	,,	1817
३२.	श्री नरसिंह भारती (अष्टम)	1817	,,	1879
३३.	श्री सच्चिदानंद शिवाभिनव नरसिंह भारती	1866	,,	1912
३४.	श्री चंद्रशेखर भारती (तृतीय)	1912	,,	1954
३५.	श्री श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ	1931		

इस परंपरा में श्रीमदभिनव विद्यातीर्थ गुरुवर्य पैंतीसवें गुरु हैं। आपने अभी हाल में दिनांक 12 नवंबर 1974 के दिन श्री श्री भारती तीर्थ स्वामी को इस शारदा पीठ श्रृंगेरी के लिए ३६ वें गुरु रूप में शिष्य स्वीकार किया है।

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी।
आगत क्रमांक... 1511 ...
दिनांक... 25/11/80 ...
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri